Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

अर्हत् उवाच
जेहिं काले परक्कंतं,
ण पच्छा परितप्पए।
जो ठीक समय पर पराक्रम करते हैं वे बाद में परिताप नहीं करते।

नई दिल्ली ● वर्ष 25 ● अंक 39 ● 01 जुलाई - 07 जुलाई, 2024 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 29-06-2024 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

शाश्वत और पवित्र सुख पाने के लिए करें आत्म युद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

अमलनेर।
23 जून, 2024

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का अपनी धवल सेना के साथ अमलनेर पदार्पण हुआ। उपस्थित जनमेदिनी को अमल-विमल बनाते हुए परम पावन ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि धर्मशास्त्र में धर्म युद्ध की बात आती है।

दुनिया में कभी-कभी युद्ध हो जाता है। धर्मशास्त्र में जो युद्ध की बात बतायी गयी है, वह अध्यात्म युद्ध की बात है। शास्त्रकार ने कहा कि बाहर के युद्ध की क्या बात है, अपने आपसे युद्ध करो। अपने आपको जीतकर आदमी सुख को प्राप्त हो जाता है।

युद्ध क्यों करें, किससे करें और कैसे करें? आत्म युद्ध करने से सुख मिल सकता है, शाश्वत और पवित्र सुख मिल सकता है। विषय भोग और इन्द्रियों के सुख क्षणमात्र सुख देने वाले होते हैं। थोड़ी देर का सुख आगे के लिए दुःख का कारण बन सकता है। युद्ध अपने से करो, अपने आप से लड़ो। नमस्कार महामंत्र के 'णमो अरिहंताणं' पद में अरि अर्थात् शत्रुओं का नाश करने वाला होता है, वे शत्रु कर्म और कषाय शत्रु होते हैं।

अपनी आत्मा के साथ युद्ध करें। आठ आत्माएं बताई गई हैं, उसमें से कषाय आत्मा, अशुभ योग आत्मा और मिथ्यादर्शन आत्मा के साथ युद्ध करें। हमारे वास्तविक दुश्मन तो हमारे भीतर ही है। बाहरी दुश्मन तो बहुत थोड़े हैं, निमित्त मात्र हैं। उपादान रूप में और ज्यादा नुकसान करने वाले शत्रु तो हमारे भीतर ही हैं। मोहनीय कर्म और कषायों को जीतने का हम प्रयास करें। कषाय है तो अशुभ योग है। मिथ्यादर्शन भी मोहनीय कर्म का ही एक अंग है।

युद्ध करने के लिए शस्त्र हमारे पास हैं या नहीं? शस्त्र है तो फिर चोट कहां लगाना। इसके लिए बाहर के शस्त्रों की अपेक्षा नहीं है। आत्मयुद्ध के लिए हमारा शस्त्र है उपशम। गुस्से को खत्म करने के लिए उपशम की अपेक्षा है। अहंकार को जीतने के लिए मृदुता का प्रयोग करें। माया को जीतने के लिए सरलता, ऋजुता का प्रयोग करें और लोभ को जीतने के लिए संतोष का प्रयोग करें।

(शेष पेज 14 पर)

आचार्यश्री महाप्रज्ञ
105वां जन्म दिवस

आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी। 03 जुलाई, 2024

टमकोर के प्यारे, माता बालू की आंखों के तारे, युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। सरल एवं मृदु व्यवहार, गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण और हर नई खोज का पहले स्वयं पर प्रयोग, ऐसे महान व्यक्तित्व को पाकर न केवल तेरापंथ समाज अपितु संपूर्ण मानव जाति धन्य-धन्य हो गई।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी जन भाषा में बोलते थे और प्रासंगिक विषयों पर अपनी बात रखते थे। वे छोटे बच्चों को सरलता से सिखाने में सक्षम थे तो साथ ही राष्ट्रपति जैसे व्यक्ति तक को भी प्रेरणा देते थे। उन्होंने अध्यात्म और विज्ञान का अनूठा संगम प्रस्तुत किया और जैन धर्म को जन धर्म बनाने में व्यापक कार्य किया।

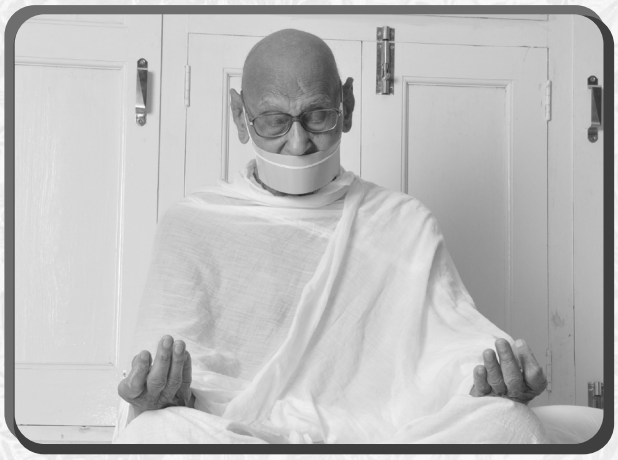

आपके 105वें जन्म दिवस पर अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार हार्दिक श्रद्धा भाव समर्पित करता है।

ज्ञान को आचरण में लाने के लिए चाहिए भक्ति का पुल : आचार्यश्री महाश्रमण

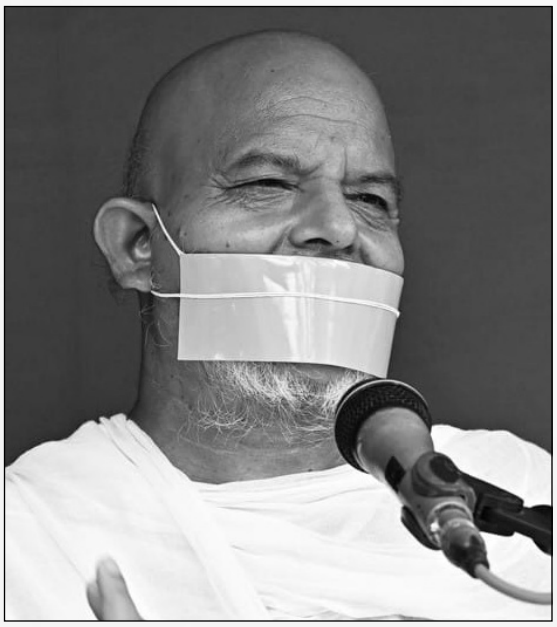

टाकरखेड़े।
22 जून, 2024

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है, तो आचरण का भी बहुत महत्व है।

ज्ञान है और सदाचार नहीं है, तो जीवन में एक बड़ी कमी है। आचरण अच्छा है, पर ज्ञान की दृष्टि से कमजोर है, तो वह भी एक कमी हो सकती है। जीवन में अहिंसा-ईमानदारी आदि अच्छे आचरण हैं तो कई बार ज्ञान थोड़ा होने पर भी आदमी का जीवन अच्छा चल सकता है और वह सफलता भी प्राप्त कर सकता है।

ज्ञान और आचरण के बीच में एक तत्त्व है- भक्ति अथवा आस्था। यह एक प्रकार का पुल है। जैसे नदी के दोनों किनारों को जोड़ने के लिए पुल बनाया जाता है, वैसे ही ज्ञान को आचरण में लाने के लिए भक्ति का पुल चाहिये। जैसे ईमानदारी को ज्ञान से जान तो लिया पर उसके प्रति आस्था नहीं होगी तो वह ईमानदारी आचरण में नहीं आ पायेगी। ज्ञान के आचरण में नहीं आने के दो कारण हो सकते हैं- आकर्षण और सामर्थ्य की कमी। भक्ति आराध्य के प्रति भी हो सकती है, तो सिद्धान्त, यथार्थ और आगम-शास्त्रों के प्रति भी भक्ति हो सकती है। बहुमान और भक्ति भीतरी हो, दृढ़ आस्था हो। ऊपरी मन से कहना भक्ति नहीं है। दोनों में बड़ा अन्तर है। हमारे आराध्य के प्रति अंतरंग भक्ति हो। अंतरंग भक्ति से भगवान से साक्षात्कार हो सकता है। अंतरंग अनुराग होने पर व्यक्ति झूठ बोलने, चोरी करने से बच सकता है। भक्ति से ज्ञान की बात आचरण में आसानी से आ सकती है।

भक्ति में शक्ति हो तो ऊंचाई की ओर आरोहण किया जा सकता है। आस्था हो तो आदमी थोड़ी कष्ट की स्थिति भी झेल सकता है। भक्ति के बिना संकल्प मजबूत नहीं होता। सपने भले पूरे नहीं हो पर संकल्प पूरे हो सकते हैं। सपने के साथ संकल्प मजबूत हो तो वे पूरे हो सकते हैं।

हम अपने आराध्य के प्रति, अपने साध्य के प्रति अन्तर्मन में श्रद्धा, भक्ति रखें और सफलता प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें। पूज्यवर के स्वागत में जिला परिषद् स्कूल से बाबा साहेब पाटिल और जितेंद्र भगीरथ पाटिल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

साधु की योग साधना चेतना को निखारने वाली बने : आचार्यश्री महाश्रमण

धरणगांव।
21 जून, 2024

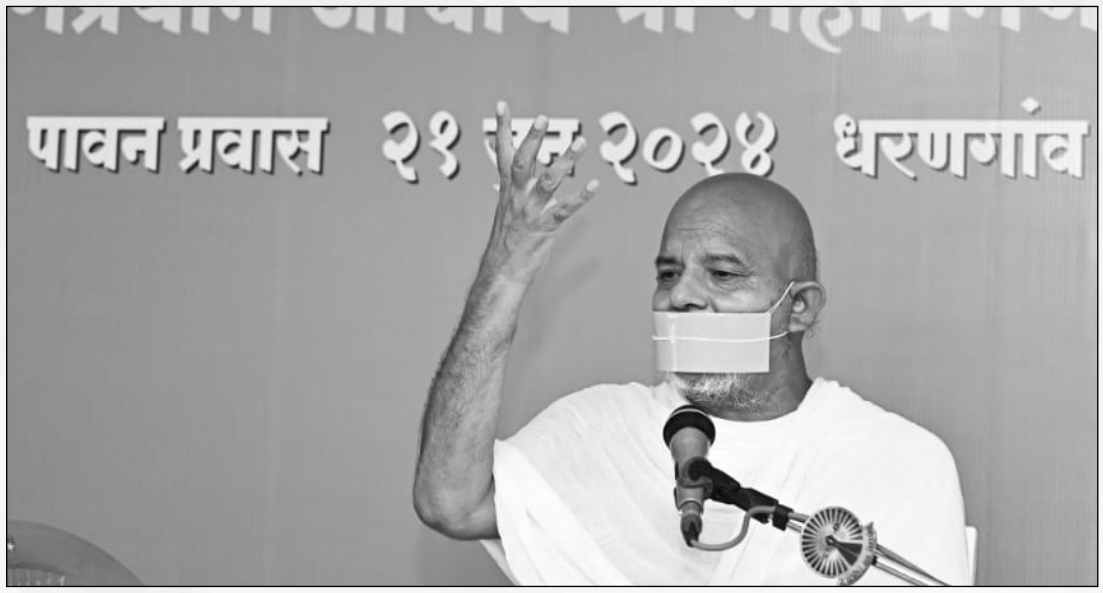

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर महायोगी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आगम वाङ्मय की भाषा में योग की साधना अध्यात्म की साधना होती है। अभिधान चिंतामणि में कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र ने कहा है- मोक्ष का उपाय योग है और वह उपाय ज्ञान, दर्शन और चारित्र स्वरूप वाला होता है। अर्थात सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की आराधना योग साधना है।

ऐसी ही दूसरी परिभाषा यह है कि मोक्ष से जोड़ने वाला योग होता है। सारी धर्म की प्रवृत्ति योग है क्योंकि वह मोक्ष से जोड़ने वाली होती है। पातंजल योग दर्शन में चित्त-वृत्ति निरोध को योग बताया गया है। जैन सिद्धान्त दीपिका - जैन दर्शन के सन्दर्भ में, भिक्षु न्याय कर्णिका- न्याय के सन्दर्भ में और मनोनुशासनम् - योग साधना, ध्यान साधना के सन्दर्भ में, ये गुरुदेव तुलसी के संस्कृत भाषा के तीन ग्रन्थ हैं। हमारे परिपेक्ष्य में देखें तो योग साधना की दृष्टि से मनोनुशासनम् का अपना महत्व हो सकता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की कृति सम्बोधि ग्रन्थ में भी अध्यात्म-धर्म की बातें संस्कृत भाषा के श्लोकों में देख सकते हैं।

अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आ जाते हैं। नाम माला में इन आठों का वर्णन संक्षेप में प्राप्त होता है। हमारे यहां प्रेक्षाध्यान योग साधना पद्धति चलती है। योग साधना हमारे जीवन में रहे। साधु तो योगी होता ही है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य की साधना भी योग ही है। शुभ योग भी योग ही है।

विश्व अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर योग को व्यापक होने का मौका मिला है। अनेकों ऋषि-संन्यासी भारत वर्ष में हुए हैं। भगवान महावीर तो महायोगी, परमयोगी थे।आसन-प्राणायाम भी योग के ही अंग हैं। आज के दिन जगह-जगह योग साधना के प्रयोग करवाये जाते हैं। योग साधना में अनेक प्रयोग श्वास के साथ जुड़े हुए हैं। गुरुदेव तुलसी भी योग साधना करते थे, साथ में हम बालसाधुओं को भी करवाते थे।

स्वाध्याय भी योग है। प्रेक्षाध्यान भी योग साधना में विख्यात हुआ है। कई गृह त्यागी व कई गृहस्थ भी इससे जुड़े हैं। कई सहज योगी, तपोयोगी होते हैं। तपोयोग साधना के भी कई प्रकार हैं। हमारे धर्म संघ में अनेक चारित्रात्माएं तपोयोग से जुड़े हैं। अतीत में भी कई साधु-साध्वियां लम्बी तपस्या करने वाले हुए हैं। निकट अतीत में दीर्घ तपस्विनी साध्वी पन्नाजी को हमने देखा। वर्तमान में भी कई साधु-साध्वियां तपस्या करते हैं। चारित्रात्माएं योगी ही रहें। साधु की योग साधना चेतना को निखारने वाली बने। दर्शन व चारित्र भी योग है। गृहस्थों में भी कई अच्छे संयमी साधक-साधिकाएं मिल सकते हैं। तपस्या से कई लब्धियां प्राप्त हो सकती है, पर उनका सदुपयोग हो। साधु की तो हर क्रिया में योग होता है, हम ध्रुवयोगी रहें। आचार्य भिक्षु भी महान योगी पुरुष थे, उन्होंने कहा था कि दो घड़ी श्वास रोककर रह जाऊं। सभी चारित्रात्माएं सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की आराधना करते रहें। पूज्यवर ने योग दिवस के उपलक्ष में ध्यान का संक्षिप्त प्रयोग करवाया। आचार्य प्रवर ने मुमुक्षु तैयार करने के लिए चार संत, चार साध्वियों और चार समणियों की नियुक्ति के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान की। चतुर्दशी के अवसर पर पूज्यवर ने हाजरी का वाचन करवाते हुए प्रेरणाएं प्रदान करवायी। आचार्य प्रवर के निर्देशानुसार मुनि ध्यानमूर्तिजी एवं मुनि देवकुमारजी ने लेख पत्र का वाचन किया।

धर्मसंघ के वयोवृद्ध श्रावक जेसराजजी सेखाणी ने 101वें जन्मदिवस के अवसर पर पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि ये वयोवृद्ध नहीं बालवृद्ध श्रावक लग रहे हैं।

पूज्यवर के स्वागत में अजय पगारिया, प्रेक्षा एवं आराध्या, उपांशु कुमठ, टीना कुमठ, ईक्षिता कुमठ, प्रतीक्षा कुमठ, मीनल कुमठ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। अरिहंत बहु मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। महाराष्ट्र विधान सभा के स्पीकर अरुण भाई गुजराती ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सज्जन लोग नहीं भूलते दूसरों के उपकार : आचार्यश्री महाश्रमण

पिम्परी खुर्द ।
20 जून, 2024

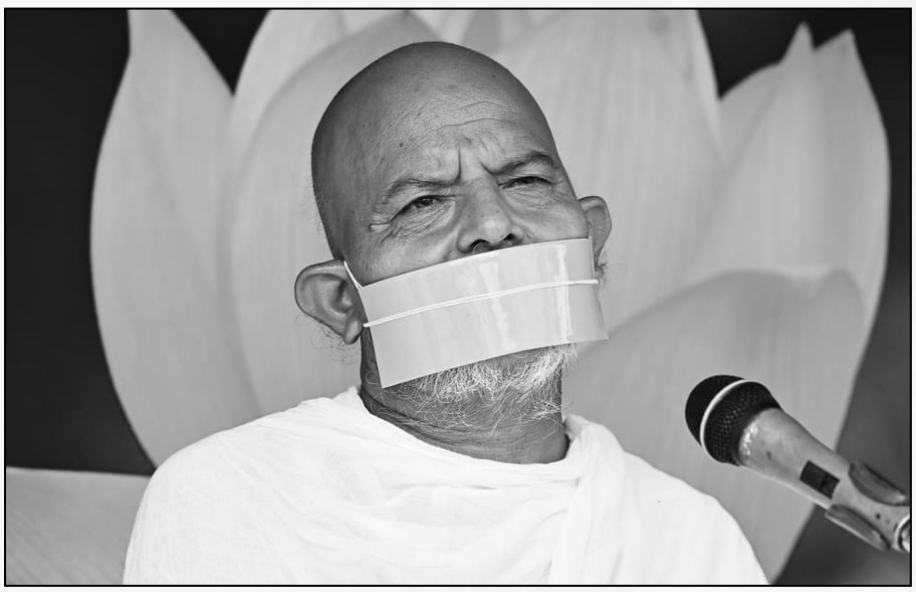

मोक्षमार्ग के पथदर्शक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि एक साधु होता है, वह यह अनुभव करे समणोहं-समणोहं। मैं श्रमण हूँ, मैं साधु हूं, संयत हूं, विरत हूं, प्रतिहत प्रत्याख्यात पाप कर्मा हूं। इसलिए मेरी हर प्रवृत्ति में श्रमणत्व रहना चाहिए। मैं चलूं तो साधु की गति से चलूं। साधु शांति से और मंद गति से चले, इससे ईर्या समिति की अच्छी आराधना हो सकती है।

बोलने में भी साधुता हो, कटु भाषा न बोले, मिथ्या या पाप कर्मों का बंध करने वाली भाषा नहीं बोले। साधु का चलना, बैठना, सोना, खाना, बोलना ये सब श्रामण्य की विधि के अनुरूप होना चाहिए। हमारे जीवन में कर्त्तव्य का बड़ा महत्व होता है। साधु अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहे। अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाना एक कमी की बात हो सकती है। आदमी को कर्त्तव्य के अकर्त्तव्य का ज्ञान होना चाहिए।

कुछ कार्य आदमी के लिए करणीय होते हैं, कुछ अकरणीय-त्याज्य होते हैं। कुछ कार्य करो तो ठीक, न करो तो भी ठीक होते हैं। कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य सबके समान नहीं होते हैं। जो लोग अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को नहीं जानते हैं, उनका कभी ऐसा अनिष्ट भी हो सकता है, जिसकी उन्होंने कल्पना ही न की हो।

साधु का पहला कर्त्तव्य है- साधुत्व की संरक्षा करना। साधुत्व का सम्यक् पालन करने का प्रयास करे। बाकी कर्त्तव्य अलग-अलग हो सकते हैं। जो कर्त्तव्य हैं उनके प्रति जागरूकता रखनी चाहिए। गृहस्थों के अपने अलग-अलग कर्त्तव्य होते हैं। राजा का दायित्व होता है- सज्जनों की रक्षा करना, असद् लोगों पर अनुशासन करना और जो आश्रित प्रजाजन हैं, उनका भरण-पोषण करना। राजनेता राजनीति में आकर अपने कर्त्तव्य का पालन न करें तो वह अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाता है।

भगवान ऋषभ ने अपनी गृहस्थावस्था में सावद्य कार्य लोगों को सिखाया था, यह उनका कर्त्तव्य था, सांसारिक लौकिक सेवा थी। लोकानुकम्पा के दो अर्थ हो सकते हैं - जनता पर अनुकम्पा और दूसरा लौकिक अनुकम्पा। ऋषभ ने मानो कर्त्तव्य निर्वाह किया था। माता-पिता का अपने बच्चे के प्रति कर्त्तव्य होता है, तो बच्चों का भी माता-पिता के प्रति भी कर्त्तव्य होता है। सज्जन लोग दूसरों के किए हुए उपकार को भूलते नहीं हैं। इसी प्रकार बच्चे भी माता-पिता की सेवा करें, पूर्व सेवा को याद रखने वाले, कर्त्तव्य पालने वाले, मां-बाप की सेवा करते हैं। हम अपने कर्त्तव्य के प्रति यथौचित्य जागरुक रहें।

पूज्यवर के स्वागत में हर्षित विद्या मंदिर के प्रमोद चौधरी तथा वैद्य किशोर सोलंकी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

50वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव पर एटीडीसी में शिविर

राजाजीनगर। अभातेयुप निर्देशानुसार तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में नियमित जांच शुल्क पर पांच दिवस तक 50% की विशेष छूट प्रदान की गई। इस छूट में विटामिन बी12, विटामिन डी, लिपिड, लिवर, रीनल, थाइरोइड प्रोफाइल, ईसीजी एवं चिकित्सकीय परामर्श सम्मिलित थे। लगभग 98 सदस्यों ने इसका लाभ लिया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा इस सत्र के नौवें रक्तदान शिविर का आयोजन लेक डिस्ट्रिक्ट रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, कादापाड़ा में किया, जिसमें कुल 46 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। परिषद के अध्यक्ष संदीप सेठिया, उपाध्यक्ष प्रथम एवं एमबीडीडी प्रभारी धनपत बरडिया, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य एवं एमबीडीडी संयोजक पारस नाहटा, कार्यसमिति सदस्य रितेश सिंघी एवं हर्ष सिंघी आदि ने शिविर में अपनी सेवाएं दी।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

कोपरी ठाणे। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी एवं मुनि अभिजीतकुमारजी का कोपरी ठाणे तेरापंथ भवन में मधुर मिलन हुआ। मुनि कमलकुमारजी ने कहा कि हम परम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जन्म के साथ जैनधर्म और तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। भिक्षु स्वामी ने बड़े संघर्षों को सहन कर हमारे लिए एक राजमार्ग का निर्माण कर दिया। आज इस धर्मसंघ की बागडोर युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के करकमलों में है। उनके कुशल मार्गदर्शन में यह संघ दिनों-दिन वर्धमानता की ओर अग्रसर है। उनकी कृपा दृष्टि पाकर मुनि अभिजीतकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी पूना में नशा मुक्ति का प्रचार कर पधारे हैं।

मुनिद्वय ने आगम मनीषी मुनिश्री महेंद्रकुमारजी की लंबे समय तक तन्मयता से सेवा कर जो ज्ञान का खजाना भरा, वह आज जन-जन को बांट रहे हैं। ऐसे युवा संतों से हमारे धर्मसंघ की शोभा बढ़ती है।

मुनि अभिजीतकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमने जब पूना में पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुना। तब गुरुदेव ने मुनिश्री कमलकुमारजी स्वामी का नाम लेकर वंदना मालूम करवाई, सुखसाता पूछी। उन्होंने कहा- मुनिश्री जहां विराजते हैं वहां सामाजिक-जाप का ठाठ लग जाता है। कार्यक्रम में मुनि जागृतकुमार जी, मुनि अमनकुमारजी, मुनि नमिकुमारजी, मुनि मुकेशकुमारजी ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

योग से स्वस्थ होता है तन मन

दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर डॉ. साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास और जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने योग और प्राणायाम का प्रशिक्षण प्रदान किया। साध्वीश्री ने योग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर समणी जयन्तप्रज्ञाजी व समणी सन्मतिप्रज्ञाजी भी उपस्थित थे। दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, गिरीश जैन, रणजीत मल भंसाली, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, मंत्री विकास बोथरा, अणुव्रत न्यास के न्यासी डालमचन्द बैद सहित अच्छी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

संतों का आध्यात्मिक मिलन समारोह

तिरुपुर, तमिलनाडु।

मुनि रश्मिकुमारजी और मुनि दीपकुमारजी का आध्यात्मिक मिलन तिरुपुर, तमिलनाडु में हुआ। मिलन के बाद मुनि वृंद का भव्य रैली के साथ तेरापंथ भवन में पधारना हुआ जहां आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन तेरापंथ सभा, तिरुपुर द्वारा आयोजित किया गया।

मुनि रश्मिकुमार जी ने इस अवसर पर कहा- संत मिलन उल्लास का प्रतीक है। मुनि दीपकुमार जी से बहिर्विहार में प्रथम बार मिलना हुआ है। इन्होंने 'शासन गौरव' मुनि राकेशकुमार जी स्वामी की बहुत सेवा की। जो बड़ों की सेवा करता है उसे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ता। मुनि दीप कुमार जी सेवा भावी और व्याख्यानी संत हैं। मुनि काव्यकुमार जी भी सेवा भावना का विकास करें। मुनि प्रियांशु की सेवा से मैं निश्चिंत बना हुआ हूं।

मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं जो हमने तेरापंथ धर्मसंघ जैसा शासन पाया है और आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे गुरु का साया हमें प्राप्त है। यह संत मिलन का प्रसंग आह्लादकारी है।

मुनि रश्मिकुमार जी स्वामी ने 'शासनश्री' मुनि धर्मचंद स्वामी की छाया बनकर सेवा की, वर्षों तक उनके सान्निध्य में रहे। मुनिश्री अच्छा श्रम कर रहे हैं। मुनि प्रियांशु को छोटे से बच्चे के रूप में देखा था, आज बड़े रूप में देख रहे हैं, विकास करते रहें। मुनि काव्य मेरे सहवर्ती हैं, अच्छा विकास किया और विकास करें। मेरे परम सहयोगी बने हुए हैं।

मुनि प्रियांशुकुमार जी और मुनि काव्यकुमार जी ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल तिरुपुर ने मंगलाचरण किया। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा तिरुपुर अध्यक्ष अनि आंचलिया ने दिया।

इरोड सभा अध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी, कोयंबटूर सभा अध्यक्ष देवीचंद मांडोत, मदुरै से अशोक तेरापंथ महिला अध्यक्षा तिरूपुर, ऋषभ आंचलिया, मुनि प्रियांशुकुमार जी के ज्ञातिजन आदि लोगों ने भाषण और गीत के माध्यम से मुनिजनों का स्वागत किया।

दायित्व का बखूबी निर्वहन करें एवं नए शिखरों का स्पर्श करें

मानसरोवर गार्डन, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, मानसरोवर गार्डन के नवमनोनीत अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह मंदार भवन में समायोजित हुआ। इस कार्यक्रम में दिल्ली सभा एवं दिल्ली की उपनगरीय सभाओं के आठ अध्यक्ष उपस्थित थे। समारोह में साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा- तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित, अनुशासित एवं प्राणवान धर्मसंघ है। एक आचार्य के नेतृत्व में चलने वाला यह संघ विश्व क्षितिज पर अपनी यश पताका फहरा रहा है। संघ के गौरव को अभिवर्धित करने के लिए आचार्यों एवं साधु-साध्वियों ने अहर्निश श्रम स्वेद बहाया है। तेरापंथ की सभा-संस्थाएं भी संघ की कीरत को चहूं दिशाओं में फैला रही है। महासभा के निर्देशन में सैकड़ों प्रांतीय सभाएं संघ-प्रभावना में अपना योगदान दे रही है। उनमें एक नाम है- मानसरोवर गार्डन का। आज इस सभा का शपथ ग्रहण हुआ है, भाई नरेंद्र के सक्षम कंधों पर दायित्व आया है। वे अपनी टीम के साथ दायित्व का बखूबी निर्वहन करें एवं नए शिखरों का स्पर्श करें।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने 'पीले चावल लाए-देकर हम हरसाए' गीत का संगान किया।

नवमनोनीत अध्यक्ष नरेंद्र पारख ने अपने भावों की प्रस्तुति देते हुए अपनी टीम की घोषणा की एवं शपथ ग्रहण करवाई। निवर्तमान अध्यक्ष विमल भंसाली एवं मंत्री मुकेश बोरड़ ने अपने दायित्व का हस्तानांतरण किया।

दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, अभातेममं की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष रीटा जैन, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, निवर्तमान अध्यक्ष विमल भंसाली, जैन महासभा के अध्यक्ष दिनेश डोसी ने शुभकामना व्यक्त की।

महिला मंडल ने बधाई गीत का संगान किया। संचालन तेयुप, दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष विकास सुराणा ने किया।

मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित

राजराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ महिला मंडल आर.आर नगर द्वारा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित आचार्यश्री तुलसी के 28वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' पर विदुषी साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के सानिध्य में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला प्रारंभ हुई। बहनों द्वारा तुलसी अष्टकम का संगान किया गया। अध्यक्षा सुमन पटावरी ने सभी का स्वागत किया। बहनों ने सुमधुर गीत से मंगलाचरण किया। 'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' इस विषय पर पूर्व अध्यक्ष कंचन छाजेड़, सरोज आर. बैद एवं लता बाफना ने अपने विचार रखते हुए कहा जड़ को सिंचित किए बिना कोई पल्लवित नहीं हो सकता और आधारभूत परिवर्तन आगे बढ़ाने के लिए सदैव अपेक्षित है। आचार्यों द्वारा समय के साथ परिवर्तन को आवश्यक बताया गया है।

साध्वी संगीतप्रभा जी के सुरीले संगान से पूरी परिषद प्रभावित हो गई। साध्वी भव्ययशा जी ने विसर्जन के महत्व को बताते हुए अपने विचार रखें।

साध्वी उदितयशा जी ने विषय पर और प्रकाश डालते हुए कहा कि विसर्जन की परंपरा तेरापंथ धर्मसंघ मे आचार्य भिक्षु से चली आ रही है। संग्रह प्रवृत्ति को छोड़ विसर्जन करने वाला व्यक्ति ही महान होता है। अहंकार, आसक्ति, ममत्व, पद आदि का यथा समय विसर्जन होना चाहिए।

इस अवसर पर साध्वीश्री ने डिजिटल डिटॉक्स की बात कहते हुए उपस्थित सभी श्रावक श्राविकाओं को महीने में एक दिन मोबाइल का सीमित उपयोग का संकल्प करवाया। कार्यशाला का सुंदर संचालन संयोजिका आशा लोढ़ा एवं सह-संयोजिका ममता सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री पदमा मेहर ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का 15वाँ पदाभिषेक दिवस मनाया

गोरेगांव (मुंबई)।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा गोरेगांव के तत्वावधान में बांगुर नगर स्थित बांगड़ सेवा सदन में आयोजित आचार्य महाश्रमण पदाभिषेक समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रजा जी ने कहा- जिस प्रकार समुद्र की विशाल जल राशि को तराजू से मापना मुमकिन नहीं, वैसे ही अनगिन गुणराशि की व्याख्या करना मेरे लिए संभव नहीं है। साध्वीश्री ने कहा- मुझे सौभाग्य से आचार्य प्रवर के प्रथम पट्टोत्सव की साक्षी बनने का अवसर मिला। ऐसे महामानव के जन्म से सरदारशहर की धरा धन्य बन गई। यह भी विरल बात है कि वैशाख माह में जन्मोत्सव, पट्टोत्सव और दीक्षोत्सव होना भी आचार्यश्री के जीवन का वैशिष्ट्य है। आपका व्यवहार कौशल, आचार कौशल श्रेयस्कर है, प्रणम्य है। आपकी संयम चेतना, सुदीर्घ चिन्तन और विवेक सम्पन्नता की हर दर्शनार्थी और हर शरणार्थी को अभिभूत करने वाली है।

साध्वीश्री जी ने कहा- आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने जीवन में अब तक नए-नए अनेक कीर्तिमान रचे हैं। कालुगणी ने एक साथ 22 दीक्षाएं दी। आचार्य श्री तुलसी ने एकसाथ - 31 दिक्षा और आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तुलसी जन्मशताब्दी के अवसर पर एक साथ 43 दीक्षा देकर स्वर्णिम इतिहास रचा है। इतना ही नहीं देश और विदेश धरा पर प्रभावक यात्रा कर मानवता का कल्याण किया। इस बार मुंबई नन्दनवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी नें चातुर्मास कर धर्मध्यान की अलख जगाई। परिभ्रमण कर वृहत्तर सिंचन कर जन जन का पथ प्रसस्त किया। यह मुंबई वासियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। ऐसे पुण्य प्रतापी तेरापंथ अधिनायक के प्रति हम मंगल कामना करते हैं, उनकी मंगल अनुशासन में धर्म संघ वर्धमान बने।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी द्वारा महाश्रमण अष्टकम से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। भीकमचंद नाहटा ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किए और गुरु कृपा के अनुभव साझा करते हुए आगन्तुकों एवं उपस्थित परिषद का स्वागत किया। तेरापंथ सभा मंत्री सुरेश ओस्तवाल, तेरापंथ महिला मण्डल की पूर्व अध्यक्षा कांता सिसोदिया, संगठन मंत्री शिप्रा सिंघी, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष रमेश सिंघवी, उपासक बाबुलाल बाफना ने श्रद्धामय उद्गार व्यक्त किए। महिला मंडल ने सामूहिक अभिवंदना-स्वर प्रस्तुत किए। तेरापंथ सभा एवं युवक परिषद सदस्यों ने समवेत स्वर में संगान किया। साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने 'शासन रे सरताज ने घणी घणी खम्मा' गीत का संगान किया। साध्वी राजुलप्रभाजी ने गुरुदेव के साथ की गई यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए कहा- आचार्यश्री करुणा के महासागर हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का किया गया आयोजन

गाज़ियाबाद ।

साध्वी संगीतश्रीजी के सानिध्य में पलेटिनियम वैली स्कूल, सूर्या नगर में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गाजियाबाद का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। पूर्वी दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण एवं गाजियाबाद सभा के सदस्यों ने सभा गीत के द्वारा कार्यक्रम को मंगलमय बना दिया। साध्वी संगीतश्री जी ने गुरू-दृष्टि को सर्वोपरि बताते हुए संगठन की शक्ति पर प्रकाश डाला एवं नव निर्वाचित अध्यक्ष और उनकी पूरी टीम के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की। तत्पश्चात् साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्रीजी ने भी क्रमशः अपनी मंगल कामनाएं व्यक्त की। महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुशील सिपानी को तथा सभा अध्यक्ष सुशील सिपानी ने पदाधिकारीगण और कार्यकारिणी के सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुशील सिपानी ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महासभा दिल्ली के आंचलिक प्रभारी के.के जैन, दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुविभा के राष्ट्रीय महासचिव भीखमचंद सुराना एवं अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारीगण की गरिमामय उपस्थिति रही। मंत्री रमेश बैगानी ने आभार ज्ञापित किया। समारोह का सफल संचालन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया।

शिविर में किया संस्कारों का बीजारोपण

मैसूर।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए 'उत्थान -न्यू डायरेक्शन एंड न्यू अप्रोच' शिविर का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा- आचार्य तुलसी ने बच्चों के भविष्य का निर्माण करने हेतु ज्ञानशाला का उपक्रम प्रारम्भ किया। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए उन्हें ज्ञानशाला भेजा जाता है। बच्चे संस्कारों से सरोबार होकर जीवन को ऊचाईयों पर ले जा सकते हैं। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा- संस्कृति को बदलने व संस्कारों का सारा श्रेय मीडिया युग को जाता है। ये मीडिया युग आज संस्कारों का पतन कर रहा है, इस युग में एक ज्ञानशाला ऐसा माध्यम है जो बच्चों में सभ्य संस्कारों का बीजारोपण कर रही है।

साध्वी मनीषाप्रभाजी ने कहा कि जीवन को सफल बनाने के तीन माध्यम हैं - विनम्रता, ग्रहणशीलता एवं घुलनशीलता। माता-पिता व बड़ों के प्रति विनम्रता होनी चाहिए। प्रकृत्ति का हर कण हमें कुछ सिखाता है, उसे ग्रहण कर विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं। चीनी की तरह व्यक्ति के जीवन से मिठास, निर्मलता व घुलनशीलता आ जाए तो सार्थक जीवन जिया जा सकता है। साध्वीश्री ने स्मार्ट लर्निंग के बारे में बच्चों को जानकारी दी।

कन्या मंडल से ताशु मेहता ने बच्चों को अपने समय का सदुपयोग करने, टेक्नोलॉजी का सही उपयोग करने की प्रेरणा दी गई। वक्ता खुशी गुगलिया द्वारा पॉजिटिव थिंकिंग पर बच्चों को एक्टिविटी करवाई गई। स्पीकर सुनिधि और मानसी के द्वारा समय प्रबंधन पर विचार व्यक्त किये गए। महिला मंडल से मधु गुगलिया, संयोजिका पदमा मेहता ने अपने विचार व्यक्त किये। शिविर में सभा, युवक परिषद और ज्ञानशाला व्यवस्थापक संदीप सामरा का श्र,म नियोजित हुआ। क्षेत्रीय संयोजिका कांता नौलखा, ज्ञानशाला प्रभारी महावीर मारू, मुख्य प्रशिक्षिका निशा देरासरिया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में मैसूर, नंजनगुड़, हुनसुर आदि क्षेत्रों के 30 ज्ञानाशाला प्रशिक्षक व लगभग 125 बच्चों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

बच्चे संस्कारों से सरोबार होकर जीवन को ऊचाईयों पर ले जा सकते हैं।

अच्छे संस्कारों का जागरण व्यक्तित्व को बनाता है महान

चिकमंगलूर। तेरापंथ धर्मसंघ में संस्कार निर्माण एवं आध्यात्मिक प्रशिक्षण के उपक्रम में ज्ञानशाला का क्रम प्रवर्धमान है। चिकमंगलूर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाएं मुनि मोहजीतकुमार जी के दर्शनार्थ पहुंची। मुनिश्री ने ज्ञानार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ज्ञानार्थी आध्यात्मिक संस्कारों के जागरण के साथ संकल्प शक्ति का विकास करे। संकल्प का बल जीवन विकास का मूल आधार है।

संकल्पबल को जागृत करने वाला सफलता को प्राप्त कर लेता है। इस अवसर पर मुनि जयेशकुमार जी ने ज्ञानार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि ज्ञानार्थियो में अच्छे संस्कारों का जागरण व्यक्तित्व को महान बनाता है। प्रत्येक ज्ञानार्थी में महान बनने का संकल्प होना चाहिए। चिकमंगलूर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका अभिलाषा डोसी ने ज्ञानशाला का परिचय दिया। ज्ञानार्थियों ने मुनित्रय के प्रति अहोभाव प्रकट किया।

खण्डकाव्य 'प्यास का सुख' पुस्तक पर समीक्षा एवं परिचर्चा संगोष्ठी

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में 'शासनश्री' मुनि मोहनलालजी 'आमेट' द्वारा लिखित खण्डकाव्य पुस्तक 'प्यास का सुख' पर समीक्षा एवं परिचर्चा संगोष्ठी का आयोजन तेरापंथ भवन में उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा - आचार्यश्री तुलसी की पावन प्रेरणा से 'शासनश्री' मुनि मोहनलाल जी आमेट ने अंजना महासती के चरित्र पर सोलह अध्यायों में खण्डकाव्य की रचना की जो "प्यास का सुख" नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित है। इस खण्डकाव्य को तेरापंथ धर्मसंघ में हिन्दी भाषा में लिखे गए उच्चस्तरीय खण्डकाव्यों में प्रथम माना गया है। इसमें अंजना महासती के जीवन चरित्र को काव्य के माध्यम से व्याख्यायित किया गया है, साथ ही मानव समाज को अनेक सीख भी दी गई है।

आज कवियों द्वारा की गई समीक्षा एवं परिचर्चा से इस कृति को एक नई पहचान मिली है। इस कृति को पढ़कर सभी पाठकों के मन में एक नया संकल्प व नई प्रेरणा का उदय हो। आपने आगे कहा- मुनि मोहनलालजी 'आमेट' तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ठ संत थे, वे पापभीरू, आत्मार्थी, विनम्र व सरल स्वभावी थे। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी का विश्वास प्राप्त किया और निष्काम भाव से संघ की सेवा की।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा- मुनि मोहनलाल जी आमेट धर्मसंघ के प्रख्यात कवि थे। उन्होंने खण्डकाव्य की रचना कर एक महनीय कार्य किया। मुनि कुणालकुमार जी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस अवसर पर कवि गजेन्द्र नाहटा, कवियित्रि कमला छाजेड़, शीला संचेती, मृदुला कोठारी, मीनाक्षी छाजेड़, ज्योत्स्ना दुगड़ आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी द्वारा प्रेषित पत्र का वाचन उत्तर हावड़ा सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने स्वागत भाषण के साथ किया। मुख्य वक्ता दुर्गा व्यास ने पुस्तक के सन्दर्भ में विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन तरुण सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री सुरेन्द्र बोथरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

विश्व रक्तदाता दिवस पर शिविर एवं सम्मान समारोह

इस्लामपुर, पश्चिम बंगाल। अभातेयुप के निर्देशन में विश्व रक्तदाता दिवस का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद इस्लामपुर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 5 रक्तदाताओं संजय करवा, मोहित अग्रवाल, शुभम सेठिया, बबलू, तापस पोद्दार को सर्वाधिक रक्तदान हेतु सम्मानित किया गया। मारवाड़ी युवा मंच एवं एकता शाखा, आदर्श संघ को भी विशिष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में रिदम एमबीडीडी के अंतर्गत ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 16 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि इस्लामपुर म्युनिसिपालिटी के चेयरमैन कन्हैयालाल अग्रवाल, तेयुप अध्यक्ष राकेश धाड़ेवा, आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल स्टोर के राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी एवं युवा साथीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में रिदम एमबीडी के संयोजक विजय दुगड़ एवं मनीष बोथरा का सहयोग प्राप्त हुआ। मंच संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री मुदित पींचा ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

वसई। साध्वी पुण्ययशा जी एवं साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वसई की 2024-26 के लिए नव मनोनीत कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह रखा गया। साध्वी पुण्ययशाजी ने कार्यकर्ता के गुणों की विस्तृत व्याख्या करते हुए सभी को संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित भाव रखने की प्रेरणा दी। साध्वी डॉ. पीयूषप्रभाजी ने कहा कि सभी क्षेत्रीय संस्थानों में तेरापंथी सभा सिरमौर होती है, मगर उनका उत्तरदायित्व भी सबसे अधिक होता है। नव मनोनीत अध्यक्ष भगवतीलाल चौहान ने उपाध्यक्ष के अशोक संचेती, गौतम गोखरू, यशवंत डांगी एवं शांतिलाल लोढा, मंत्री सुभाष हिरण, कोषाध्यक्ष वर्धमान सोलंकी, सहमंत्री राजेश राठौड एवं मुकेश रांका, संगठन मंत्री कांतिलाल बोहरा, प्रचार मंत्री मनोज संचेती एवं सम्पूर्ण कार्य कारिणी के नामों की घोषणा कर उन्हें शपथ ग्रहण करवाई। नव मनोनीत अध्यक्ष भगवतीलाल चौहान ने सभी से आव्हान किया कि हमें संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहना है और सभी को कदम से कदम मिलाकर धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आगे से आगे बढ़ने का सतत् प्रयास करना है।

महासभा अध्यक्ष बने मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष

छोटी खाटू। संस्था सिरोमणी जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया को आचार्यश्री महाश्रमण के वर्ष 2026 के मर्यादा महोत्सव हेतु मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, छोटी खाटू के अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। डालम चंद धारीवाल के प्रस्ताव का गौतम डुंगरवाल ने अनुमोदन किया एवं पूरे सदन ने सर्व सम्मति से सेठिया का मनोनयन किया। इस अवसर पर अनेकों प्रवासी महानुभाव उपस्थित हुए।

पूर्व अध्यक्ष ताराचंद थारीवाल, सभा अध्यक्ष डालम चंद धारीवाल, प्रफुल्ल बेताला, युवक परिषद अधयक्ष विनीत भंडारी, मंत्री दीपक बेताला, एवं अनेकों सदस्यों ने सेठिया का स्वागत किया एवं पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर नव मनोनीत अधयक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। सहमंत्री विकास सेठिया ने गीत का संगान किया। सभा का सफल संचालन मंत्री राजेश बेताला ने किया। तेरापंथ युवक परिषद सदस्यों का व्यवस्थाओं में सराहनीय योगदान रहा।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **चेन्नई।** धीनावास (सोजत सिटी) निवासी, चेन्नई प्रवासी रतनचन्द हुकमीचंद पवनकुमार प्रसन्नकुमार लोढ़ा के पेरियमेंट स्थित नवीन प्रतिष्ठान 'हेल्थ एंड लाइफ सर्जिकल्स' का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। संस्कारक स्वरूप चन्द दाँती एवं हनुमान सुकलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि परिसम्पन्न करवाई।

नूतन गृह प्रवेश

■ **हनुमन्तनगर।** तेयुप एचबीएसटी हनुमंतनगर द्वारा सम्पतराज शान्तिनाथ अर्हत जैन के गिरीनगर स्थित नूतन गृह 'तुलसी सदन' का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक सज्जनराज कटारिया ने पूरे विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम सम्पादित करवाया।

■ **दिल्ली।** छोटी खाटू निवासी दिल्ली (पश्चिम विहार) प्रवासी सुनंदा - सुशांत फुलफगर (सुपुत्र पुष्पा देवी - संतोक फुलफगर) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा एवं मनीष बरमेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **दिल्ली।** बीबीपुर (जींद) निवासी दिल्ली (शाहदरा) प्रवासी रुचि-रवि कुमार सिंघल के सुपुत्र का नामकरण संस्कारक सुभाष दुगड़, संजय संचेती एवं महेन्द्र श्यामसुखा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। तेयुप दिल्ली द्वारा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

अणुव्रत भवन दिल्ली में हुआ चारित्रात्माओं का मंगल प्रवेश

धार्मिकता पूर्ण आचरण से करें जीवन का विकास

दिल्ली।

साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा जी का मंगल प्रवेश अणुव्रत भवन, दिल्ली में विशाल व भव्य जुलूस के साथ हुआ। गांधी शांति प्रतिष्ठान से अणुव्रत भवन तक जुलूस में समणी जयन्तप्रज्ञाजी व समणी सन्मतिप्रज्ञाजी भी साध्वीश्री के मंगल प्रवेश में संभागी बनीं। विशेष रूप से उपस्थित सावित्री देवी जिन्दल भी जुलूस के आरंभ से भवन प्रवेश तक सहभागी बनी।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के नेतृत्व में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दक्षिणी दिल्ली, तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली, तेरापंथ महिला मंडल, दक्षिणी दिल्ली, ज्ञानशाला ने पूर्ण जागरूकता व उत्साह के साथ अनुशासित और मर्यादित जुलूस में जयघोषों से मार्ग को गुंजायमान किया।

अणुव्रत भवन के पावन प्रांगण में स्वागत समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात् तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक मंगलाचरण प्रस्तुत किया। शास्त्रीनगर ज्ञानशाला के बच्चों ने एक नाटिका के माध्यम से प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किया। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने समस्त चारित्रात्माओं, समणीवृंद व आगंतुकों का स्वागत किया एवं गुरूदेव के प्रति कृतज्ञता के भाव प्रस्तुत किए। तेयुप दिल्ली की ओर से उपाध्यक्ष राकेश बैंगानी ने दक्षिण दिल्ली सभा की ओर से अध्यक्ष सुशील पटावरी, तेरापंथ महिला मंडल दक्षिण दिल्ली की ओर से अध्यक्ष शिल्पा बैद, निवर्तमान दक्षिणी दिल्ली सभाध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा ने भावाभिव्यक्ति दी। मध्य दिल्ली एवं दक्षिणी दिल्ली महिला मंडल ने सुमधुर गीतिकाओं के माध्यम से स्वागत एवं स्मरणीय प्रवास काल को समर्पित गीतिकाएं प्रस्तुत की।

समाज भूषण 'अजातशत्रु' मांगीलाल सेठिया ने स्वागत अभिनंदन करते हुए समाज को दर्शन सेवा हेतु प्रेरित किया। अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी एवं कल्याण परिषद संयोजक के सी जैन ने अणुव्रत भवन को चातुर्मास प्रदान कराने हेतु परम् पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी सौभाग्ययशाजी व साध्वी कल्याणयशाजी ने गीतिका का संगान किया।

साध्वी डॉ. कुन्दनरेखाजी ने जन-मानस को प्रेरणा देते हुए फरमाया धार्मिकता पूर्ण आचरण से हम जीवन का विकास कर सकते हैं। संचालन महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

युवादिवसः सुविचारों का शिलालेख कार्यक्रम

अहमदाबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद द्वारा 'सुविचारों का शिलालेख' कार्यक्रम के अन्तर्गत गुरुदेव के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का वृहद् आगाज हुआ। अभातेयुप के निर्देशन में देश भर में तेयुप द्वारा गुरुदेव के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसके अंतर्गत युवाशक्ति द्वारा कई कार्य किए जाते हैं। तेयुप अहमदाबाद द्वारा 50 वाहनों एवं 25 प्रमुख जगहों पर आचार्य प्रवर के पावन संदेश बैनर के माध्यम से जन-जन तक का पहुंचाने का कार्य किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता, सहमंत्री द्वितीय लक्की कोठारी ने हरी झंडी दिखाकर वाहनों को रवाना किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की परिसम्पन्नता पर विविध आयोजन

कालू

साध्वी उज्जवलरेखाजी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी का 50वां दीक्षा कल्याण महोत्सव तेरापंथ भवन में मनाया गया। वैशाख का महीना गुरुदेव के तीन विशेष दिवस से जुड़ा हुआ है। वैशाख शुक्ला नवमी को जन्म दिवस, वैशाख शुक्ला दशमी को पट्टोत्सव, वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को दीक्षा दिवस। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी नम्रप्रभा जी द्वारा महाश्रमण अष्टकम से किया गया। साध्वी उज्जवलरेखाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी विशेष प्रतिभा और गुणों के धनी हैं। गुरुदेव गुणों के सुमेरु है, विशेषताओं के पुंज हैं। आचार्य प्रवर का खाद्य संयम, शरीर संयम, इंद्रिय संयम, वाणी संयम बेजोड़ है। आपकी समता, क्षमता, वत्सलता, करुणा निस्पृहता आदि अनुत्तर है। साध्वी हेमप्रभाजी ने कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं को रखा। साध्वी स्मितप्रभा जी ने भी गुरुदेव के प्रति मंगल कामनाएं व्यक्त की। मुमुक्षु भावना ने गुरुदेव की विशेषताओं के बारे में बताया और उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरणा दी। सभी साध्वियों द्वारा सामूहिक स्वर में आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति उनके गुणों का संगान किया गया। कन्या मंडल और महिला मंडल द्वारा गुरुदेव की पदयात्रा, अनुशासन, साधना, साहित्य, जनकल्याण और उनकी प्रवचन शैली को नाटिका के द्वारा बताया। ज्ञानशाला के द्वारा भी विशेष प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष बुद्धमल लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त किये। साध्वी अमृतप्रभा जी ने आचार्य महाश्रमण जी के दशकों की यात्रा को बताते हुए कार्यक्रम का संचालन किया।

बालोतरा

तेरापंथ भवन के अमृत सभागार में साध्वी रतिप्रभाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन अद्भुत, अलौकिक, विलक्षण और अनुपमेय है। तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा में आचार्यश्री महाश्रमणजी एक दिव्ययोगी के रूप में विख्यात हैं। आपका हर क्षण अप्रमत्त का प्रतीक है। साध्वी कलाप्रभाजी ने कहा संयम ज्ञात से अज्ञात की ओर प्रस्थान करना है, मृत्यु से अमरत्व की ओर प्रस्थान करना है। आपने कविता के द्वारा गुरुदेव के गुणों और साधना का विवरण प्रस्तुत किया। साध्वी पावनप्रभाजी ने कुशल आचार्य महाश्रमणजी की विशेषताओं के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आचार्य प्रवर शांत, सरल, विनम्र, मधुर हैं, आपकी साधना उत्कृष्ट है। सभा एवं परिषद् सदस्यों द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। मुमुक्षु शेफाली, मुमुक्षु रक्षा एवं मुमुक्षु साधना ने गीतिका के द्वारा अपनी भावना व्यक्त की। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर काव्यांजलि के द्वारा अपनी आस्था व्यक्त की। ऋषि चोपड़ा ने गीत का संगान किया। संघगान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

शांति निकेतन, गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का 51वां दीक्षा दिवस 'युवा दिवस' के रूप में आयोजित किया गया। साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने गुरुदेव को विशेषताओं का पुंज बताते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का जीवन एक कुशल प्रबंधक का जीवन है। उन्होंने सांसारिक जीवन व साधु जीवन के बारे में तुलनात्मक चिंतन करने के उपरांत वैराग्य धारण किया। उनका समय प्रबंधन, शक्ति प्रबंधन शानदार है। साध्वीश्री ने उपस्थित युवाओं, महिलाओं सहित सभी श्रावक-श्राविकाओं को नशा मुक्त जीवन जीने का संकल्प करवाया। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन प्रसंगों को सुनाते हुए कहा कि अनुकंपा उनका विशिष्ट गुण है। आप जीव विराधना के प्रति हर समय इतने जागरुक रहते हैं कि कहीं जीवों की हिंसा न हो जाए। अनुशासन करते समय भी पूर्ण सजग रहते हैं। साध्वी ध्रुवरेखाजी ने कहा कि आज ही के दिन आचार्यश्री ने प्रवृत्ति से निवृत्ति अथवा असंयम से संयम की ओर प्रस्थान किया था। साध्वी कंचनरेखाजी ने उनके समर्पण और सेवा भावना को अद्भुत बताया। साध्वीवृन्द ने लयबद्ध प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के माध्यम से बहुत ही आकर्षक तरीके से आचार्यश्री के अवदानों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ मोहनलाल भंसाली द्वारा प्रस्तुत काव्य पाठ से किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेयुप उपाध्यक्ष ललित राखेचा ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

युवक परिषद व किशोर मंडल के साथियों ने सामूहिक सामायिक कर अपनी अभिवंदना प्रस्तुत की। कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुत नाटिका सबके आकर्षण का केंद्र रही। महिला मंडल द्वारा 'महाश्रमण की गौरव गाथा' की लयबद्ध प्रस्तुति दी गई। प्रस्तुति के साथ 6 विशेष संकल्प करवाए गए। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री रतन लाल छलाणी ने किया।

जसोल

ओसवाल भवन में आचार्यश्री महाश्रमणजी का 50वां दीक्षा दिवस मनाया गया। महिला मंडल द्वारा 'महाश्रमण अष्टकम' एवं अणुव्रत गीत के संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचन्द सालेचा ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण में विलक्षण प्रतिभा है। वे महान दार्शनिक हैं और कुशल प्रशासक के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ को संभाल रहे हैं, उनका पूरा जीवन तप और अध्यात्म के रंग में रंगा हुआ है। तेरापंथ सभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने आचार्य महाश्रमणजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष ऊषभराज तातेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, माणकचन्द संकलेचा, संपतराज चौपड़ा, अशोक प्रदीप, पवन छाजेड़, प्रवीण भंसाली, चंदादेवी चौपड़ा, मोहिनी देवी संकलेचा, पुष्पादेवी बुरड़, जागृति ढ़ेलडिया सहित वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। अभयमती डोसी के नेतृत्व में ज्ञानशाला बालक-बालिकाओं द्वारा सुंदर नाटक की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का सफल संचालन कान्तिलाल ढ़ेलडिया ने किया। तेरापंथ सभा, अणुव्रत समिति, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

गांधीनगर, दिल्ली

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी श्री संगीतश्री जी एवं श्रमण संघ के आचार्य शिवमुनि जी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का 50वां दीक्षा कल्याण दिवस कृष्णानगर स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के महाश्रमण अष्टकम उच्चारण से हुआ। साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ के सरताज हैं। उनका जन्म नाम मोहन है अर्थात मोह का हनन करने वाला। आपकी स्थितप्रज्ञता, एकाग्रता, विनम्रता, सहजता बेजोड़ है। आचार्य श्री महाश्रमण जी इतना कठोर श्रम करवाते हैं कि एक साथ 47 किमी का विहार कर दिल्ली में शासनमाता को दर्शन सेवा करवाने पधारे। आपके नेतृत्व में धर्मसंघ की ध्वजा विश्व क्षितिज पर लहरा रही है। आचार्य महाश्रमण की अभ्यर्थना में श्रमण संघ की साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा- आज हम एक ऐसे आचार्य का दीक्षा दिवस मना रहे हैं जिनसे पूरा जिन शासन गौरव की अनुभूति कर रहा है। इसी क्रम में साध्वी कमलविभा जी एवं साध्वी मुदिताश्रीजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। पूर्वी दिल्ली भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा, निगम पार्षद संदीप कपूर, डॉ. अनिल गोयल भी सम्मिलित हुए। अभ्यर्थना के क्रम में गांधीनगर सभाध्यक्ष निर्मल छल्लाणी, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी, विकास मंच के महामंत्री महेन्द्र श्यामसुखा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली के युवकों व पूर्वी दिल्ली महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। सभा के मंत्री बजरंग कुण्डलिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शांतिप्रभाजी ने किया।

वसई

आचार्यश्री महाश्रमण जी के 51वें दीक्षा दिवस पर वसई में साध्वी पुण्ययशाजी एवं साध्वी डॉ. पीयूषप्रभाजी के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत वसई महिला मंडल के मंगलाचरण के द्वारा हुई। साध्वी पुण्ययशा जी ने युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की महिमा का बखान करते हुए कहा कि गुरुदेव तीर्थंकर के प्रतिनिधि हैं और हम सौभाग्यशाली हैं कि इस पंचम कलिकाल में हमें गुरु के रूप में ऐसी पवित्र, निर्मल आत्मा प्राप्त हुई। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के मनोनयन दिवस पर उनकी विनम्रता की प्रशंसा करते हुए बताया कि चाहे जो परिस्थितियों हो वे सदैव गुरु के प्रति समर्पित एवं सदैव विनम्र भाव से रहती हैं।

साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस पर उनकी जीवनी का चित्रण किया, साथ ही साध्वीप्रमुखाश्रीजी के मनोनयन दिवस पर भी अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी हमारे धर्म संघ की एक विलक्षण प्रतिभा है। जिन्होंने प्रथम पंक्ति में दीक्षा लेकर समण श्रेणी में नियोजिका के रूप में सेवा दी और देश-विदेश में धर्म यात्राएं की। अब वे श्रद्धेय आचार्यश्री के द्वारा नियुक्त नवम साध्वीप्रमुखाश्री के रूप में धर्म संघ की सेवा कर रहे हैं। साध्वी बोधिप्रभाजी एवं साध्वी भावनाश्रीजी ने गुरुदेव के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी वर्धमानयशाजी एवं साध्वी सुधाकुमारीजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। तेरापंथी सभा वसई से वर्धमान सोलंकी, तेरापंथ युवक परिषद से विकास इंटोदिया, महिला मंडल से चंदा गोखरू एवं आशा गुंदेचा ने गुरुदेव के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशाजी ने किया।

अमराईवाड़ी

परमपूज्य आचार्यप्रवर का 50वां दीक्षा कल्याण महोत्सव युवा दिवस के रूप में वड़ोदरा-अहमदावाद हाईवे पर स्थित जैन विहारधाम में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा- आज एक अध्यात्म सुमेरू के तेजस्वी सन्यास के 50वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। आज से 50 वर्ष पूर्व मुनि सुमेरमल जी 'लाडनूं' के कर कमलों से सरदारशहर में दीक्षित हुए आचार्य महाश्रमण का आभामण्डल उज्ज्वल, प्रभावशाली और आकर्षक है। आचार्य महाश्रमण उम्र से युवा, चिन्तन से प्रौढ़, ज्ञान से स्थविर और ऋजुता से बालक हैं। इस अवसर पर साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी सुरभिप्रभाजी एवं साध्वी राहतप्रभाजी ने गीत का सुमधुर संगान किया। साध्वी ज्योतियशाजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा- आज का दिन तेरापंथ के भाग्योदय का दिन है। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत तेयुप वड़ोदरा के मंत्री सुमित कोठारी के मंगलाचरण से हुई। तेयुप अमराईवाडी के अध्यक्ष हितेश चपलोत एवं तेयुप वड़ोदरा के अध्यक्ष हितेश मुणोत ने आराध्य की अभिवन्दना में भावों की अभिव्यक्ति दी। अमराईवाडी सभाध्यक्ष रमेश पगारिया, दिनेश चण्डालिया एवं दीपक श्रीमाल ने भी श्रद्धा भाव समर्पित किए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 105 वें जन्म दिवस पर विशेष आलेख

प्रज्ञा के अनुत्तर पुरुष – आचार्य महाप्रज्ञ

● डॉ मुनि मदन कुमार ●

आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रज्ञा पुरुष थे। वे जागृत चेतना के धनी थे। उन्होंने प्रज्ञा-जागरण के महान प्रयोग किये और प्रज्ञा के मंत्रदाता बन गये। उनका मानना था कि इन्द्रिय और मन के श्रम को न्यून कर अतीन्द्रिय चेतना और प्रज्ञा को जगाया जा सकता है। इसका तात्त्विक आधार यह है कि यह क्षयोपशमजन्य और साधनाजन्य है। प्रज्ञा की उपलब्धि मति ज्ञानावरण के विशिष्ट क्षयोपशम से होती है। श्रुताराधना इसमें प्रधान हेतु बनता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का संपूर्ण जीवन श्रुताराधना का महान निदर्शन है। वे विनय और समर्पण के मूर्त रूप थे। वे अपनी अलौकिक साधना से महामानव ही नहीं, विश्वमानव बन गये। उनकी उत्कृष्ट साधना से प्रभावित होकर आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया और वह अलंकरण ही उनका नामकरण हो गया। मुनि श्री नथमल और आचार्य श्री महाप्रज्ञ इन दो विशिष्ट नामों से वे विश्व में ख्यात-नामा हो गये, उनका जीवन निरन्तर उत्कर्ष की ओर बढ़ता गया।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ मौलिक विचारक और दार्शनिक थे। वे सत्य-संधाता थे। उनमें दृष्टि और आचरण की भरपूर शुचिता थी। उन्होंने अणुव्रत का दर्शन लिखा, प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति का आविष्कार किया, मूल्यपरक शिक्षा के रूप में जीवन विज्ञान को प्रस्तुत किया, आगम-संपादन का महनीय कार्य किया और अहिंसा समवाय का विचार रखा। उनके इन महत्त्वपूर्ण कार्यों से उनका यशः काय बहुत शक्तिशाली बना। उनके अंतिम दशक में की गयी अहिंसा यात्रा ने उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को बहुत यशस्वी बना दिया। उनके जादुई प्रवचनों ने लोगों के दिलो-दिमाग को आनंद से सराबोर कर दिया। हिन्दू और मुस्लिम समाज को वे देवदूत की तरह प्रतीत होने लगे। उनके विराट व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्वामी अवधेशानन्द गिरी ने लिखा- युगपुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ दर्शनीय ही नहीं अपितु अत्यन्त महनीय भी थे। ऐसा लगा मानो भगवत्ता धरा पर आविर्भूत हुई है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विचारों की मुक्त कंठ से सराहना हुई है। मुझे एक योगी मिले थे। आध्यात्मिक संवाद चल रहा था, उन्होंने भाव विभोर स्वर में कहा - 'महावीर और महाप्रज्ञ इस धरा पर बार-बार जन्म नहीं लेते हैं।' मैं दिल्ली में अटल बिहारी वाजपेयी से बात कर रहा था। वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ के साहित्य के अच्छे पाठक रहे हैं। वार्ता के दौरान उन्होंने भावुक होकर कहा-'मैं आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य का लोहा मानता हूं। समस्या का समाधान देने वाला महामानव और महागुरु होता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने बहुत हृदयस्पर्शी समाधान दिये हैं। कहा जाता है कि उनका एक प्रवचन पाठक या श्रोता के जीवन की दिशा को बदलने में समर्थ है। उनका ज्ञान बहुत व्यापक और निर्मल था। वे समस्या की जड़ को पकड़ना जानते थे। उनके विचार सार्वभौम समाधानदायक हैं। नौ दशक का प्रलम्ब जीवन और आठ दशक का संयम जीवन जीकर उन्होंने संसार को अमृतपान कराया है, जो अध्यात्म जगत की एक अद्भुत मिसाल है। वे ज्ञाता द्रष्टा भाव में रहने वाले महायोगी थे तथा समाधि एवं एकाग्रता के सफलतम निदर्शन थे। यों लगता था कि वे सदा ध्यान और भाव क्रिया में ही रहते थे। उनकी ढेर सारी विशेषताओं से प्रभावित होकर अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने कहा था कि जीने की कला सीखनी हो तो महाप्रज्ञजी से सीखो।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ का वाङ्मय विशाल और युगीन है। युग को नयी दृष्टि देने वाला है। जीवन में दृष्टि दान और चक्षु दान सबसे बड़ा है। वे सही अर्थों में चक्षुदाता थे। वे महान तत्त्ववेत्ता थे तथा सुकरात और आइंस्टीन की तरह सुप्रतिष्ठित थे। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल जैन के शब्दों में- 'आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विद्वान थे पर उनमें विद्वत्ता का भार नहीं था।' उनमें आवेश, अभिमान आदि निषेधात्मक भाव क्षीण-प्रायः हो चुके थे। जैसे वीतरागता आने पर ही केवलज्ञान प्रकट होता है वैसे ही उपशम की साधना होने पर ही विशिष्ट मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। मति-श्रुत की निर्मलता भी व्यक्ति को अलौकिक आनन्द से भर देती है तथा ज्ञान के नए क्षितिज उद्घाटित कर देती है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का मति और श्रुत ज्ञान बहुत निर्मल था। उन्हें ज्योतिर्भूत कहा जा सकता है। उनके कुछ विचारों को यहां बिन्दु रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूं -

राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। राग होने पर द्वेष अवश्य होता है। व्यक्ति पहले वीतद्वेष बनता है और फिर वीतराग। इस तरह वीतरागता हमारा ध्येय बन जाता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि राग और देष में जन्य-जनक भाव है। राग होने पर ही द्वेष की उत्पत्ति होती है अतः राग को ही मिटाना है। राग को पहचानना ही कठिन है फिर मिटाना कितना कठिन हो जाता है।

तपस्या के बारह प्रकार हैं। उपवास से निर्जरा होती है, किंतु उपवास से जो निर्जरा होती है, उससे कहीं ज्यादा निर्जरा स्वाध्याय और ध्यान से होती है। अगर प्रतिसंलीनता का अभ्यास करें तो भारी निर्जरा होती है। निर्जरा आत्म-शोधन है और उसे बढाने का यह श्रेष्ठ मार्ग है। प्रतिक्षण प्रतिसंलीनता में रहना जीवन की सर्वोच्च सफलता है।

सुख, शान्ति और सुविधा को भिन्न-भिन्न मानना चाहिए। वर्तमान युग सुख का नहीं, सुविधा का युग है। इस सुविधावादी युग में सुख की खोज की जा रही है, लेकिन सुख मिल नहीं रहा है। कारण यही है कि ज्ञान और श्रद्धा का समन्वय नहीं है। श्रद्धा और ज्ञान - इन दोनों का योग है शान्ति। जहां शान्ति है, वहां सुख है और जहां सुख है, वहां शान्ति है। जीवन का लक्ष्य पैसा नहीं, मोक्ष होना चाहिये। लक्ष्य युक्त जीवन ही जीवन है। शान्ति, संतोष, पवित्रता और आनन्द के बिना जीवन की सरसता कहां? जीवन का साध्य अनुत्तर रहे। मोक्ष जीवन का अनुत्तर लक्ष्य है। आस्तिकता का मार्ग बहुत कठिन है। आत्मा और ईश्वर, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म, कर्म और कर्मफल को सिद्ध करना कठिन है। सिद्ध करने के लिये बहुत बुद्धि और चिन्तन चाहिये।

निमित्तदर्शी नहीं, उपादानदर्शी बनो। उपादान को देखना आध्यात्मिक विकास है। (शेष पेज 12 पर)

गणाधिपति तुलसी की महान् कृति–आचार्य महाप्रज्ञ

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता का वरण करना चाहता है पर सफलता उसे मिलती है जिसका आचार-विचार-संस्कार-व्यवहार अच्छा होता है और ये सब अच्छे होते हैं अच्छे लोगों के सम्पर्क से। अच्छे लोगों के सम्पर्क में रहे बिना अच्छे विचारों का सृजन संभव नहीं। अच्छे विचारों का होना जीवन का पहला घटक तत्त्व है। आचार्य महाप्रज्ञ के विचार उन्नत थे, कारण उन्हें कालूगणी जैसे महान आचार्य तथा आचार्य तुलसी जैसे गौरवशाली संत का बचपन से ही सुयोग मिला। कहा जा सकता है गणाधिपति तुलसी की महान् कृति थी-आचार्य महाप्रज्ञ।

भारतीय परम्परा में अनेक ऋषि, महर्षि, संत, महंत, निर्ग्रन्थ व आचार्य हुए हैं जिन्होंने अपनी आत्मा साधना के साथ जन-मानस को कृतार्थ किया था एवं जो आज भी विश्व मानव के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। उनका विराट व्यक्तित्व और कर्तृत्व सम्पूर्ण जैन समाज ही नहीं बल्कि मानव मात्र के लिए पथ-दर्शक है। उन महान विभूति का नाम है तेरापंथ धर्मसंघ के दशम् अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ। आचार्य श्री महाप्रज्ञ अनेक विशेषताओं को लिए हुए थे। वे अपने दीक्षा गुरू के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। दीक्षित होते ही पूज्य गुरुदेव कालूगणी ने ज्ञानार्जन हेतु अपने सुशिष्य मुनि तुलसी को सौंप दिया। आचार्य महाप्रज्ञ का जैसा समर्पण भाव कालूगणी के प्रति था वैसा ही शिक्षा गुरू मुनि तुलसी के प्रति रहा। उनकी एक ही भावना थी- 'आणाए मामगं धम्मं'। आगम का यह वाक्य उनका जीवन सहचर बन गया अर्थात् गुरू आज्ञा ही मेरा परम धर्म है। इसीलिए जब एक बार गुरू तुलसी ने आचार्य बनने के बाद पूछा- क्या तुम मेरे जैसा बनोगे तो महाप्रज्ञ ने सहज भाव से कहा- आप बनाओगे तो बन जाऊंगा। यह था उनका समर्पण भाव। उन्होंने गुरू के प्रति बहुमान और अटूट श्रद्धा का भाव रखा और उसी में अपूर्व आनंद की अनुभूति की।

कुछ लोग ऐसे होते है जिनमें साधना होती है पर विद्वता नहीं, तो कुछ में विद्वता होती है पर साधना नहीं। आचार्य महाप्रज्ञ में साधना और विद्वता दोनों का समावेश था। उन्होंने ज्ञानार्जन के द्वारा विद्वता हासिल की तो प्रेक्षाध्यान के नित नये प्रयोगों से गहन साधना की। साधना की गहराई में उतरकर अन्वेषण कर अनेक उपलब्धियां हासिल की। इतने उद्भट विद्वान होने के बावजूद वे कभी लौकेषणा में नहीं गए। वे एक ऐसे अनगार थे जिनमें अहंकार और आवेश का भाव नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे कि मुझे पता नहीं कि कभी जीवन में किसी बात को लेकर मेरे मन में अहंकार अथवा आवेश के भाव आए हों। ऐसे व्यक्ति ही साधना के क्षेत्र में विकास कर सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ऋजुप्राज्ञ थे। सरलता तो उनके रग-रग में थी। बचपन से ही वे भद्र प्रकृति थे। सरलता के साथ उनमें सहनशीलता का भी समावेश था। सरलता और सहनशीलता के सद्गुण ने अपने गुरु तुलसी के दिल में एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। यों कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी कि वे गुरूदेव श्री तुलसी के दिल में उतर गए। अनुकूल परिस्थिति में उदासीन भाव और प्रतिकूलता की स्थिति में समभाव रखा और यही बन गया उनका महान् लक्ष्य।

यद्यपि वे एक धर्मसंघ के आचार्य बने पर उनका चिंतन सदैव असाम्प्रदायिक ही रहा। सम्प्रदाय को वे संघीय व्यवस्था मानते थे। उनके कार्य जैन शासन की प्रभावना तथा मानवता की सेवा के संदर्भ में थे। इसी बात को सामने रखकर सदा अपने प्रवचन सार्वभौम और सर्वजन हितोपदेश के रूप में कराते थे। यहां तक जीवन के आठवें दशक में उन्होंने अहिंसा यात्रा की। 'सत्वेषु मैत्री' की प्रबल भावना से उन्होंने सप्त वर्षीय यात्रा के दौरान जन-जन को नैतिकता, सद्भावना और भाईचारे का संदेश दिया। जातिवाद, प्रांतवाद, सम्प्रदायवाद व्यक्ति और समाज में अलगाव पैदा करता है। अतः भारत की अनेक महान हस्तियां उनके चरणों में आकर मार्गदर्शन प्राप्त करती रही चाहे वे राजनेता, समाजनेता, धर्मगुरू आदि हो या किसी संस्था या संघ से जुड़े हुए ही क्यों नहीं हो। एक बार राष्ट्रपति अब्दुल कलाम उनके चरणों में आए तो आचार्य महाप्रज्ञ ने एक ऐसी बात कही कि वे उनके फैन हो गए। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा- कलाम साहब आपने अनेक मिसाइलें बनाई हैं किन्तु अब शान्ति की मिसाइल बनाईए। इस बात से वे इतने प्रभावित कि प्रतिवर्ष आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में आने लग गए। जब सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास करवा रहे थे तो वे अपना जन्मदिन मनाने व आशीर्वाद लेने पहुंच गए और एक शानदार कार्यक्रम आयोजित हुआ। फिर एक पुस्तक का निर्माण हुआ जो आचार्य महाप्रज्ञ और राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की सम्मिलित रचना के रूप में प्रकाशित हुई।

आचार्य महाप्रज्ञ की आगम सम्पादन के साथ साहित्य के क्षेत्र में दो सौ से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनका वह साहित्य आज भी जन-जन का मार्गदर्शन कर रहा है। हम उनके जन्मदिवस पर यही कामना करते हैं कि उनके द्वारा प्राप्त अवदानों से, मार्गदर्शन से अपने साधना वैभव को बढ़ाते रहें तथा उनकी आचार-निष्ठा, संयम-प्रियता, सरलता, गंभीरता, सहिष्णुता के साथ मानवता, नैतिकता व भाईचारे की भावना को विकसित कर सकें। हम भी जीएं सरलता से, चले सजगता से, कहे सुगमता से, रहे निस्पृहता से, सहे सहनशीलता व समता से, मानें कृतज्ञता से - उन कुशल नेतृत्व प्रदानकर्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रति उनके 105 वें जन्मदिन पर कृतज्ञ भाव से चैतन्य का वंदन-वंदन-वंदन।

संबोधि

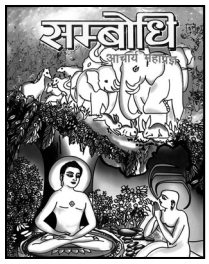

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

अदृष्ट के बिना दृष्ट का कोई अर्थ नहीं होता। दृष्ट के पीछे अदृष्ट की शक्ति काम कर रही है। यह स्पष्ट है किन्तु वहां तक पहुंच कठिन है। अंधी, बहरी 'हेलन कीलर' से पूछा-इस संसार में सबसे आश्चर्यजनक घटना क्या है? उसने कहा-लोगों के पास कान हैं, पर शायद ही कोई सुनता हो, लोगों के पास आंखें हैं पर शायद ही कोई देखता हो और लोगों के पास हृदय है पर शायद ही कोई अनुभव करता हो। बस, यही आश्चर्यजनक घटना है। 'हेलन कीलर' का आशय है-मनुष्य अपने सेंटर (केन्द्र) अदृश्य से परिचित नहीं है।

दृष्ट का आकर्षण व्यक्ति को मूढ़ बना देता है। जो बाहर में उलझ जाए वही मूढ़ होता है, भले, चाहे वह विद्वान् हो या अविद्वान्। वस्तुएं जब व्यक्ति को पकड़ लेती हैं। तब कैसे वह अदृष्ट को खोज सकता है। महावीर कहते हैं-दृश्य जगत ही सब कुछ नहीं है। दृश्य जगत की उपादेयता अदृश्य के होने पर ही है। इन्द्रियां, मन अदृश्य की शक्ति के बिना व्यर्थ हैं। इन्द्रिय जगत के पीछे उनका एक संचालक है। उसे भूलना ही संसार है। साधक दृष्ट में विरक्त हो और अदृष्ट में अनुरक्त हो, दृष्ट से वियुक्त हो और अदृष्ट से संयुक्त हो, दृष्ट में अज्ञ हो और अदृष्ट में विज्ञ हो-इसी से जीवन में एक नया आयाम खुल सकता है।

४१. श्रमणो वा गृहस्थो वा, यस्य धर्मे मतिर्भवत्।
आत्माऽसौ साध्यते तेन, साध्ये कृत्वा स्थिरं मनः॥

जिसकी मति धर्म में लगी हुई है, वह श्रमण हो या गृहस्थ, साध्य में मन को स्थिर बनाकर आत्मा को साध लेता है।

आत्मा की जब आत्मा में स्थिति हो जाती है, तब उसका कार्य सिद्ध हो जाता है। इसका अधिकारी मुमुक्षु है। मुमुक्षुभाव की जिसमें जितनी प्रबलता होती है, वह उतना ही आत्मा के निकट पहुंच जाता है। मुमुक्षु के लिए जाति, वर्ण, क्षेत्र आदि की कोई मर्यादा नहीं है।

चाहे गृहस्थ हो या साधु, जो संयम के मार्ग पर बढ़ रहा है, जिसका मुमुक्षाभाव प्रज्वलित है, वह लक्ष्य तक पहुंच जाता है।

भगवान् महावीर इतने उदारचेता थे कि उन्होंने लक्ष्य सिद्धि की बात किसी वेश, लिंग या व्यक्ति से नहीं जोड़ी। उन्होंने स्पष्ट कहा- 'चाहे गृहस्थ हो या संन्यासी, चाहे जैन हो या जैनेतर, चाहे स्त्री हो या पुरुष सब मुक्त हो सकते हैं, यदि वे अनुत्तर संयम का पालन करते हैं।'

आत्मा सबमें है, किन्तु उसके होने का अनुभव सबको नहीं है। जिसमें अनुभव है, आत्मा का जन्म वहीं है। जो उसे प्रकट करने में उद्यत होता है वही साधक होता है। फिर वह चाहे श्रमण-मुनि, भिक्षु हो या गृहस्थ। आत्मा का संबंध बाहर से नहीं, अंतर्जागरण से है। उसके लिए अभीप्सा प्रबल चाहिए। महावीर का यही घोष है कि आत्मवान बनो। अपने भीतर है उसे खोजो। अनात्मवान कोई भी हो सब समान है। जिसने आत्मा को साधा, पाया वही धन्यवादार्ह है। बुद्ध ने आनंद से कहा- 'आनंद तू धन्य है, जो प्रधान साधना में लग गया।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
साध्यसाधनसंज्ञाननामा त्रयोदशोऽध्यायः।

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

आचरण की दो प्रेरणाएं हैं-मूर्च्छा और विरति । मूर्च्छा-प्रेरित आचरण धर्म नहीं है। विरति प्रेरित आचरण धर्म है। गृहस्थ पदार्थ का संग्रह करता है, पदार्थ के बीच जीता है और पदार्थ का भोग करता है। सहज ही प्रश्न होता है-पदार्थ के मध्य रहने वाला गृहस्थ धर्म की आराधना कैसे कर सकता है? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् महावीर ने विभज्यवादी दृष्टिकोण से दिया गृहस्थ धर्म की आराधना कर भी सकता है और नहीं भी कर सकता। मूर्च्छा या आसक्ति की मात्रा घटती-बढ़ती रहती है। प्रत्याख्यान की शक्ति को विकृत बनाने वाली मूर्च्छा उपशांत या क्षीण होती है, तब विरति की चेतना प्रकट होती है। इस अवस्था में पदार्थ के मध्य रहने वाला गृहस्थ भी विरत हो सकता है, धर्म की आराधना कर सकता है। जितनी मूर्च्छा उतनी अविरति/असंयम। जितनी अमूर्च्छा उतनी विरति/संयम। अविरति और विरति अथवा मूर्च्छा और अमूर्च्छा के आधार पर भगवान् महावीर ने धर्म को दो भागों में विभक्त किया। प्रस्तुत अध्याय में इसी विषय की परिक्रमा है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूं?

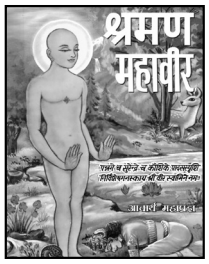

पुष्य उस समय का प्रसिद्ध सामुद्रिक था। उसका ज्ञान अचूक था। दूर-दूर के लोग उसके पास अपना भविष्य जानने के लिए आते थे। उसे अपनी सफलता पर गर्व था। एक दिन वह घूमता-घूमता गंगा के तट पर पहुंचा। उसने वहां तत्काल अंकित चरण-चिह्न देखे। वह आश्चर्य के सागर में डूब गया।

'ये किसके चरण हैं?' उसने मन-ही-मन इसे दो-चार बार दोहराया। 'जिसके ये चरण-चिह्न हैं, वह कोई साधारण आदमी नहीं है, वह कोई साधारण राजा नहीं है, वह चक्रवर्ती होना चाहिए। चक्रवर्ती और अकेला, यह कैसे? चक्रवर्ती और पदयात्री, यह कैसे? चक्रवर्ती और नंगे पैर, यह कैसे? कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूं?' वह सन्देह के सागर में डूब गया।

वह चरण-चिह्नों के पास जाकर बैठा। गहरी तन्मयता और सूक्ष्मता से उन्हें देखा। 'मैं स्वप्न में नहीं हूं'- उसे अपने पर भरोसा हो गया। उसके मन में वितर्क हुआ-यदि सामुद्रिक शास्त्र सच्चा है और मैंने श्रद्धा के साथ उसे अपने गुरु से समझा है तो निश्चित ही यह व्यक्ति चक्रवर्ती होना चाहिए। यदि यह चक्रवर्ती नहीं है तो सामुद्रिक शास्त्र झूठा है। उसे मैं गंगा की जलधारा में बहा दूंगा और मैं इस निष्कर्ष पर आ जाऊंगा कि मेरे गुरु ने मुझे वह शास्त्र पढ़ाया, जिसकी प्रामाणिकता आज कसौटी पर खरी नहीं उतरी।

वह चरण-चिह्नों का अनुसरण करते-करते थूणाक सन्निवेश के पास पहुंच गया। उसने देखा, सामने एक व्यक्ति ध्यान मुद्रा में खड़ा है। ये चरण-चिह्न इसी व्यक्ति के हैं। वह भगवान् के सामने जाकर खड़ा हो गया। शरीर पर एक अर्थ भरी दृष्टि डाली-पैर से सिर तक। वह फिर असमंजस में खो गया। इसके शरीर के लक्षण बतलाते हैं कि यह चक्रवर्ती है और इसकी स्थिति से प्रकट होता है यह पदयात्री भिक्षु है। वह कुछ देर तक दिग्भ्रांत-सा खड़ा रहा। भगवान् ध्यान से विरत हुए। पुष्य अभिवादन कर बोला, 'भंते! आप अकेले कैसे?'

'इस दुनिया में जो आता है, वह अकेला ही आता है और अकेला ही चला जाता है, दूसरा कौन साथ देता है?'

'नहीं भंते! मैं तत्त्व की चर्चा नहीं कर रहा हूं। मैं व्यवहार की बात कर रह रहा हूं।'

'व्यवहार की भूमिका पर मैं अकेला कहां हूं?'

'भंते! आप परिवार-विहीन होकर भी अकेले कैसे नहीं हैं?'

'मेरा परिवार मेरे साथ है।'

'कहां है भंते! यही जानना चाहता हूं।'

'संवर (निर्विकल्प) ध्यान मेरा पिता है। अहिंसा मेरी माता है। ब्रह्मचर्य मेरा भाई है। अनासक्ति मेरी बहन है। शांति मेरी प्रिया है। विवेक मेरा पुत्र है। क्षमा मेरी पुत्री है। उपशम मेरा घर है। सत्य मेरा मित्र-वर्ग है। मेरा पूरा परिवार निरन्तर मेरे साथ घूम रहा है, फिर मैं अकेला कैसे?'

'भंते! मुझे पहेली में मत उलझाइए। मैं अपने मन की उलझन आपके सामने रखता हूं, उस पर ध्यान दें। आपके शरीर के लक्षण आपके चक्रवर्ती होने की सूचना देते हैं और आपकी चर्चा साधारण व्यक्ति होने की सूचना दे रही है। मेरे सामने आज तक के अर्जित ज्ञान की सच्चाई का प्रश्न है, जीवन-मरण का प्रश्न है। इसे आप

सतही प्रश्न मत समझिए।' '

पुष्य! बताओ, चक्रवर्ती कौन होता है?'

'भंते! जिसके आगे-आगे चक्र चलता है।'

'चक्रवर्ती कौन होता है?'

'भंते! जिसके पास बारह योजन में फैली हुई सेना को त्राण देने वाला छत्ररत्न होता है।'

'चक्रवर्ती कौन होता है?'

'भंते! जिसके पास चर्मरत्न होता है, जिससे प्रातःकाल बोया हुआ बीज शाम को पक जाता है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

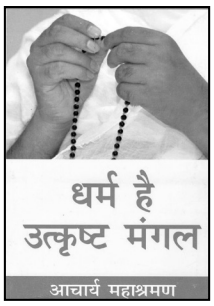

-आचार्यश्री महाश्रमण

विशुद्धि का प्रयोग

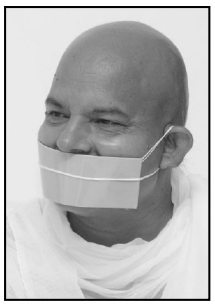

ठाणं के दसवें स्थान में दस प्रकार के प्रायश्चित्त बतलाए गए हैं-

१. **आलोचना योग्य** - गुरु के समक्ष अपने दोषों का निवेदन।

२. **प्रतिक्रमण योग्य** - 'मिथ्या मे दुष्कृतम्'- मेरा दुष्कृत मिथ्या हो, इसका भावनापूर्वक उच्चारण।

३. **तदुभय योग्य** - आलोचना और प्रतिक्रमण।

४. **विवेक योग्य** - अशुद्ध आहार आदि का उत्सर्ग।

५. **व्युत्सर्ग योग्य** - कायोत्सर्ग।

६. **तप योग्य** - अनशन, ऊनोदरी आदि।

७. **छेद योग्य**- दीक्षा पर्याय का छेदन।

८. **मूल योग्य**- पुनर्दीक्षा।

६. **अनवस्थाप्य योग्य**- तपस्या पूर्वक पुनर्दीक्षा।

१०. **पारांचिक योग्य** - भर्त्सना एवं अवहेलनापूर्वक पुनर्दीक्षा।

प्रायश्चित्त के विभिन्न प्रकारों का आधार है अपराध की विभिन्नता, लघुता और गुरुता।

तत्त्वार्थाधिगमसूत्र (सभाष्यानुसारिणी टीका) में प्रायश्चित्त के नौ प्रकार बतलाए गए हैं- आलोचन, प्रतिक्रमण, तदुभय, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार, उपस्थापन। इनमें परिहार का अर्थ है दोषी के साथ वन्दना, आलाप, आहार-पानी आदि का संबंध विच्छेद कर देना। इसकी अवधि एक मास से लेकर छह मास तक की होती है।

उपस्थापन का अर्थ ठाणं में निर्दिष्ट 'मूल' से मिलता है। शेष सभी शब्दशः व अर्थशः ठाणं के वर्गीकरण से मिलते-जुलते हैं।

प्रायश्चित्त की अनेक परिभाषाएं की जा सकती हैं-

१. अतिचार (दोष) की विशुद्धि के लिए किया जाने वाला प्रयत्न प्रायश्चित्त है।

२. जिससे पाप का छेदन होता है वह प्रायश्चित्त है।

३. जिससे अपराध का शोधन होता है वह प्रायश्चित्त है।

आभ्यन्तर तप के छह प्रकारों में प्रथम और निर्जरा के बारह भेदों में सप्तम स्थान पर अवस्थित 'प्रायश्चित्त' नामक तप साधकों के लिए आधारभूत है। इसके सहारे पतित भी पावन हो जाते हैं। जिनसे कभी कोई गलती नहीं होती, ऐसे छद्मस्थ व्यक्ति तो कितने मिल पाएंगे? इस संदर्भ में संस्कृत का श्लोक मननीय है-

स्खलित : स्खलितो वध्य, इति चेन्निश्चितं भवेत्।
द्वित्रा एव हि शिष्येरन्, बहुदोषा हि मानवाः ।।

गलती करने वाला खत्म कर दिया जाए-यदि यह सिद्धान्त मान्य हो जाए तो दो-तीन आदमी ही बचेंगे, क्योंकि मनुष्य दोष बहुल होते हैं।

विनम्रता का प्रयोग

तेरापंथ धर्म संघ के प्रवर्तक थे आचार्य भिक्षु। मैंने उनको साक्षात् देखा नहीं, उनके शिष्य समुदाय को भी नहीं देखा और देखा हो तो याद नहीं। पर उनके बारे में कुछ सुना है, कुछ पढ़ा है, चिन्तन-मनन भी कुछ किया है। उससे निष्पन्न ज्ञान-चक्षु से मैं आचार्य भिक्षु और उनके कुछ शिष्यों को कुछ- कुछ देखने में समर्थ हूं। खेतसीजी स्वामी आचार्य भिक्षु के एक सन्त शिष्य थे। मैं उन्हें विनम्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में देखता हूं। उनके लिए कहा जाता है कि स्वामीजी (आचार्य भिक्षु) जब उन्हें किसी कार्य के लिए पुकारते तब यह देख लिया जाता कि उनके हाथ में पात्र आदि कोई गिर कर टूट जाने वाली वस्तु तो नहीं हैं तथा उन तक कोई निर्देश पहुंचाते समय भी निर्देश ले जाने वाले को स्वामीजी सावधान कर दिया करते थे कि निर्देश सुनाने से पहले यह देख लेना कि उसके हाथ में कोई वस्तु तो नहीं है। संभवतः स्वामीजी के द्वारा आहान करने पर तथा निर्देश देने पर हाथ जोड़ने को शीघ्रता में वे अपने हाथ में स्थित वस्तु को भूल जाते थे और वह गिरकर टूट जाती थी। कई बार ऐसा होने से स्वामीजी आदि सभी यह ध्यान रखा करते थे।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनि श्री मोतीजी 'छोटा' (बाघावास) दीक्षा क्रमांक : 96

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। उन्होंने दीक्षा लेते ही 76 दिन का तप किया। एक छहमासी तप भी किया। बाकी की तपस्या का उल्लेख नहीं मिलता है। आपने शीतकाल में शीत और उष्णकाल में आतापना ली।

- साभार: शासन समुद्र -

जुलाई 2024
सप्ताह के विशेष दिन

10 जुलाई
आचार्यश्री डालचंद जी जन्म दिवस कल्याणक

12 जुलाई
भगवान महावीर च्यवन कल्याणक

14 जुलाई
भगवान अरिष्टनेमि निर्वाण कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी के देवलोकगमन पर चारित्रात्माओं के उद्गार

संतता की एक नजीर : 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी (लाछुड़ा)

● साध्वी मननयशा ●

मेरे संयम जीवन के प्रेरणास्रोत, अलबेले साधक, भद्रिक संत, कर्मठ व्यक्तित्व प्रबल पुरुषार्थी, श्रमसीकरों के पथिक, संतता की जीती जागती नजीर मेरे संसार पक्षीय चौरड़िया परिवार में बड़े पिताजी, लाछुड़ा के गौरव 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी का देवलोक गमन हो गया है। वे गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के पावन कर कमलों से माघ शुक्ला सप्तमी वि. सं. 2002 में सरदारशहर में दीक्षित हुए, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि तीनों गुरुओं के विश्वस्त कृपापात्र संत थे। वह शिष्य धन्य होता है जो आचार्यों के दिल में विशिष्ट स्थान बना लेता है। 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी इसी के पर्याय थे।

विनयो नाम शिष्याणां, वात्सल्यंच गुरोरअपि।
यत्र योग्यं प्रकुर्वाते, तत्र हार्दं समर्पणम्।।

जिसका जीवन सदैव ही गुरू चरणों में सहज समर्पित है उस पर गुरू का अनुग्रह अकल्पित बरसता है और उसे गुरू का प्रसाद जीवन भर प्राप्त होता रहता है। आपके समर्पण, अनुशासन, आचारनिष्ठा और प्रखर प्रतिभा का मूल्यांकन करते हुए 11 जून 2012 पचपदरा में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आपको 'शासनश्री' सम्बोधन से संबोधित किया।

'शासनश्री' मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी के अनन्य सहयोगी संत के रूप में 30 वर्षों तक उनकी सन्निधि में साधना रत रहे। उनके साथ रहते हुए ही आपश्री को माघ शुक्ला तृतीया वि. सं. 2045 छापर में आचार्यश्री तुलसी ने अग्रगण्य की वंदना करवाई। कुछ चातुमार्स संयुक्त रूप में भी हुए। 'शासनश्री' मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी अपना परम सौभाग्य मानते थे कि उन्हें मुनि हर्षलाल जैसा विनीत समर्पित साधु मिला। एक बार का प्रसंग है- गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की सन्निधि में तारानगर मर्यादा महोत्सव पर सभी साधु-साध्वियों की संगोष्ठी में आचार्यश्री तुलसी ने मुनिश्री हर्षलाल जी स्वामी के लिए फरमाया- मुनि हर्षलाल ऐसा संत है जो बाबू का बाबू और हाली का हाली है। बहुत ही भद्रिक साधु है, सहज एवं सरल है। अभी इनको मुनि राकेशकुमारजी की सेवा में दिल्ली भेजना है, वे अभी अत्यधिक अस्वस्थ हैं। इनको भेजने से उनको बहुत ही चित्त समाधि मिलेगी। परम पूज्य गुरुदेव के निर्दश से विहार कर शीघ्र ही अकेले दिल्ली पहुंचे। इस प्रकार आप सेवा परायण, श्रमशील, कुशल कलाकार, व्याख्यानी और सूक्ष्म लिपिकार थे। आपश्री ने गीता, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, भक्तामर, शांत सुधारस भावना आदि कई व्याख्यान सूक्ष्म अक्षरों में लिखे। आपके अक्षर मोती जैसे थे।

आपके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी 'अप्पभाषी मियासणे'। यह आगम सूक्त आपके जीवन में चरितार्थ था। आप बहुत ही कम बोलते थे। आपके अधरों पर हर-क्षण हर-पल अध्यात्म रस की गौरव गाथा गुन-गुनाती रहती थी। आपकी नस-नस में गुरू भक्ति की अमिट छाप थी। जीवन में साधना, स्वभाव में सरलता, व्यवहार में विनम्रता, वाणी में माधुर्यता, मुख पर सौम्यता, हृदय में पवित्रता थी। नपे-तुले शब्दों में आप अपनी बात को गहराई में अभिव्यक्त करने की अद्भुत कला आपमें थी।

आपके जीवन दर्शन के कई दृश्य दृष्टि गोचर हुए। ज्ञान से आपका जीवन पवित्र बना हुआ था। जप के निर्मल जल से अभिस्नात होकर आप नित्य उर्जावान बने रहते थे। स्वाध्याय और ध्यान की अनवरत आराधना कर अपने आंतरिक सौंदर्य को द्विगुणित किया। उसकी आभा से आप्लावित आपका आभामंडल जन-जन के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया। धुव योगों की आराधना कर आपने 'रहे भीतर जीए बाहर' को आत्म सात कर लिया।

वर्तमान में तेरापंथ धर्म संघ में आप दीक्षा पर्याय में प्रथम नम्बर के संत थे। आपके जीवन की प्रत्येक क्रिया में संतता झलकती थी, सहज साधना सधी हुई थी। मैंने इन पचास वर्षों में सेवा के दौरान यह अनुभव किया कि आप के उपशम की साधना अद्वितीय थी। छोटे-बड़े सभी कार्य आप स्वयं सहज भावना से करते थे। निकट में रहने वाले संत आपका बहुत मान-सम्मान करते, सेवा सुश्रुषा में तत्पर रहते, फिर भी आप उनसे किसी प्रकार की प्रायः सेवा नहीं लेते थे। हमेशा यही फरमाते कि मेरा स्वयं का कार्य मुझे ही करना चाहिए। मेरी निर्जरा मैं दूसरों को क्यों दूं। ऐसे निस्पृह, अल्पोपधि, त्यागी संतों की सन्निधि में रहने वाला व्यक्ति स्वयं प्रेरित हो जाता है। लगभग 91 वर्ष की उम्र तक भी स्वयं का काम स्वयं करते रहे। चरैवेति-चरैवेति की शुभ्र भावना से तिन्नाणं तारयाणं का मार्ग प्रशस्त करते रहे।

मेरे परम उपकारी के प्रति मैं बहुत-बहुत कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं कि आपके चरणों की सेवा में मेरे वैराग्य के नव पुष्प खिले, अनासक्त चेतना का संबोध मिला, समता के विकास का मार्ग दर्शन मिला और मिली संयम पयार्य में स्फटिक सी पारदर्शिता।

कहा गया है-

'इत्र पूर्ण होने पर भी उसका सुवास रहता है।
गीत पूर्ण होने पर भी उसका अहसास रहता है।
जानता है जो शानदार जीवन जीना जग में,
समय पूर्ण होने पर उसका इतिहास रहता है।।'

आपश्री की अनेक विशेषताओं से भरा जीवन मेरे लिए कदम-कदम पर मार्गदर्शक बनता रहेगा। आपकी सेवा में बैठकर जो खुद पाया वह मेरे जीवन विकास की आधारशिला है, प्रेरणा है। आपके अनुग्रह से मेरे जीवन का पौर-पौर आप्लावित व आह्लादित हुआ है। सहवर्ती संत व्यवस्थापक मुनिश्री यशवंतकुमार जी स्वामी व मोक्ष मुनि दोनों संतों ने मुनिश्री हर्षलाल जी स्वामी को खूब चित्त समाधि पहुंचाई है। सेवा का पूरा-पूरा लाभ लिया। मैं आपश्री के प्रति कृतज्ञता के भाव अर्पित करती हूं। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति मगंलकामना करती हूं कि आपकी आत्मा जहां भी गयी है वह शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करे।

तुम्हारा निर्मल मन, है आकर्षक व्यक्तित्व।
शांति करूणा दृढ़ता का अदभुत रस अस्तित्व।।

निस्पृह साधक थे 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी

● मुनि दीप कुमार ●

भारतीय संस्कृति में संत परम्परा बहुत विशिष्ट रही है। संत परंपरा ने संस्कृति को ऊंचा रखने में बहुत योगदान दिया है। सभी धर्म सम्प्रदायों में अपने-अपने ढंग से संतों की परम्परा रही है। उसमें जैन धर्म संतत्व को गौरवान्वित करने वाला रहा है। जैन धर्म के तेरापंथ सम्प्रदाय में भी संतों की बड़ी उज्जवल साधना रही है। उन्हीं संतों में एक नाम था 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी का।

मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी के जीवन में बहुत विशेषताएं थी। मैंने जितना जाना, देखा और समझा, वे निस्पृह साधक थे। विनम्रता उनके रोम-रोम में थी। सेवाभावना उन जैसे विरलों में होती है। उनको देखकर ऐसा लगता मानो संतता को वे सच्च अर्थ में जी रहे थे। उनके लिए हमारे संघ में प्रसिद्ध वाक्य चलता था 'हर्षलालजी स्वामी चौथे आरे के संत है।' मैं आज बहुत गमगीन हूं, मुनिश्री के प्रयाण के समाचार सुनकर। रह-रह कर मुनिश्री के सान्निध्य में बिताए वे पल याद आ रहे हैं। मुझे 'शासनगौरव' मुनिश्री राकेश कुमारजी स्वामी के बाद आज किसी की बहुत याद आ रही है तो वे मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी हैं।

मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी की जन्मभूमि मेवाड़ की पवित्रधरा थी। लाछुड़ा गांव को उनकी जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ। मुनिश्री के जीवन मे गांव का बहुत असर था। आपने गुरुदेव तुलसी के कर-कमलों से अल्पायु में दीक्षा ग्रहण की। आप में गुरुदृष्टि आराधने की अनुपम कला थी। जहां गुरुदेव ने आपको नियोजित किया वहां आप समर्पण भाव से रहे। अनेक संतों की सेवा का कीर्तिमान बनाया। आपमें गुरु के प्रति समर्पण अद्भुत था। इसलिए गुरुदेव तुलसी आपके लिए संदेश देते हुए प्रारंभ में लिखवाते - 'विनीत शिष्य मुनि हर्षलाल!' नहीं तो प्रारंभ में सामन्यतया गुरुदेव केवल शिष्य लिखवाते। मुनिश्री की लिपि कला बेजोड़ थी। एक पन्ने में श्रीमद भगवद्गीता जैसा ग्रंथ लिखकर अनुपम कार्य कर दिखाया।

मुनिश्री ने और भी कई आगम आदि सूक्ष्म लिपि में लिखकर संघ के भंडार की श्रीवृद्धि की। मुनिश्री का तत्वज्ञान भी अच्छा था। आपका मुनिश्री राकेश कुमारजी के सान्निध्य में बहुत रहना हुआ। वह आपके लिए भी वरदान साबित हुआ। मुनिश्री के साथ दिल्ली, बम्बई, कलकता, जयपुर जैसे बड़े-बड़े महानगरों रहना हुआ। आपने मुनिश्री राकेश कुमार जी स्वामी के साथ 27 चातुर्मास किए। मुनि श्री के साथ सर्वाधिक आप रहे। मुनिश्री फरमाते थे 'बड़े शहरों में प्रवास के दोरान कई बार बाहर कार्यक्रम होते तो हर्ष मुनि ठिकाने में रहकर व्याख्यान आदि, सारी जिम्मेदारी संभाल लेते। मैं उनके कारण निश्चिंत रहता।' हर्षलालजी स्वामी के अग्रगण्य बनने के बाद भी आपने गुरुदेव से अर्ज करके मुनिश्री राकेश कुमारजी स्वामी के साथ कई चातुर्मास किए। आपका और मुनिश्री का बहुत जुड़ाव था। एक बार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुनिश्री राकेश कुमारजी स्वामी को फरमाया- 'तुम्हारे और हर्षलालजी के मन के तार जुड़े हुए हैं।'

सन् 2000 में मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी दिल्ली में अस्वस्थ थे। आपने गुरुदेव से निवेदन किया 'मुझे राकेशकुमारजी स्वामी के सेवा में भिजवाने की कृपा करायें'। गुरुदेव ने कृपा कराई और आप तारानगर मर्यादा महोत्सव के बाद एकाकी विहार कर दिल्ली में मुनिश्री की सेवा में पधारे। उस समय के युवाचार्य श्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री के लिए संदेश देते हुए लिखा 'मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी स्वयं अर्ज कर आपकी सेवा में पधार रहें है। मुनिश्री की सेवा भावना से हमारा मन आल्हादित है।' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी का सेवा भाव अनुकरणीय है।

मुनिश्री राकेशकुमारजी स्वामी के सान्निध्य में दीक्षा के बाद मेरा प्रथम चातुर्मास उदयपुर में हुआ। उस समय आप भी मुनिश्री के साथ संयुक्त रूप में थे। उस समय में नवदीक्षित था। हर्षलालजी स्वामी ने मुझे साधुचर्या का प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया। विशेष रूप से रजोहरण बांधना सिखाया। मुनिश्री की शांत जीवन शैली ने मेरे मन को बहुत आकर्षित किया। स्वावलंबिता, निष्कामता आदि गुण मानों आपमें अखूट रूप से भरे हुए थे। आपकी वत्सलता का मुझे उस चातुर्मास में और सन् 2016 के करीब दो महीने में खूब अवसर प्राप्त हुआ। आज सुबह-सुबह मुनिश्री के देवलोक गमन के समाचार सुने तो एक बार विश्वास नहीं हुआ। वर्तमान में आप धर्मसंघ में दीक्षा पर्याय में सबसे ज्येष्ठ थे। 'शासनश्री' मुनि श्री हर्षलालजी स्वामी के प्रयाण पर मैं शत-शत श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं और मंगल कामना करता हूं कि आप शीघ्र लक्षित मंजिल का वरण करें।

महाश्रमणोस्तु मंगलम् का सामूहिक आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' का सामूहिक आयोजन उत्तर हावड़ा तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, मध्य कोलकाता, बेहाला, हिंदमोटर, बाली-बेलूर, रिसड़ा महिला मंडलों की सहभागिता के साथ हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रज्ञा के उत्तुंग शिखर हैं, अलौकिक शक्ति के पुंज हैं, नैसर्गिक प्रतिभा के धनी, सूक्ष्मद्रष्टा, प्रौढ़ चिंतक एवं प्रबल पुरुषार्थी हैं। वे समता व करुणा के निर्झर तथा मानवता के मसीहा हैं। मुनि जिनेशकुमार जी ने आचार्य की आठ सम्पदाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा- शास्त्रों में आचार्य के लिए आठ सम्पदाओं का विधान किया गया है। वे आठ सम्पदाएँ क्रमशः आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, शरीर संपदा, वचन संपदा, वाचना संपदा, मति संपदा, प्रयोग संपदा, संग्रह परिज्ञा संपदा के रूप में उल्लिखित हैं। आचार्यश्री महाश्रमण जी में सभी संपदाएं समाहित हैं।

महाश्रमणोस्तु मंगलम् की आयोजना आचार्य के प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट करने अवसर है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संभागी महिला मंडलों के सदस्यों द्वारा सामूहिक महाश्रमण अष्टकम् के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा ते.म.म. की अध्यक्षा सुजाता दुगड़ ने दिया। रेखा बैंगानी, महिमा कोठारी, बबीता छोरिया, कनक बरड़िया, सुनीता संचेती ने निर्धारित विषयों पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल उत्तर हावड़ा एवं तेरापंथ महिला मंडल बेहाला की सदस्याओं ने सुमधुर गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन उत्तर हावड़ा तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री रेणु समदरिया ने व कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी किया।

'सम्पन्न बनो' पुस्तक पर आधारित प्रश्नमंच प्रतियोगिता में उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, मध्य कोलकाता, बेहाला एवं बाली-बेलूर के महिला मंडलों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान मध्य कोलकाता महिला मंडल के ग्रुपों ने व तृतीय स्थान उत्तर हावड़ा महिला मंडल के ग्रुप ने प्राप्त किया।

प्रतियोगिता का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। तेरापंथ महिला मंडल उत्तर हावड़ा द्वारा विजेताओं को पारितोषिक देकर पुरस्कृत किया गया।

सोलह दिवसीय प्रवास रहा संघ प्रभावक

मॉडल टाउन।

साध्वी अणिमाश्रीजी के मॉडल टाउन में सोलह दिवसीय सफलतम प्रवास के पश्चात जैन कॉलोनी में अजीत भादानी के प्रांगण में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। श्रावक समाज ने तीनों टाइम प्रातः प्रवचन, मध्याह्न तत्वचर्चा एवं सायं व्याख्यान में उत्साह के साथ भरपूर लाभ लिया।

स्वर-विज्ञान, मंत्र-विज्ञान, परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला एवं अनुष्ठान में श्रावक-श्राविकाओं, युवापीढ़ी एवं बालपीढ़ी ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा- जीवन रूपी वीणा से सुरीली तान तब ही निकलेगी, जब वीणा के सातों तार सही होंगे।

प्रेम, करुणा, श्रम, सहनशीलता, सेवा, सौहार्द एवं समन्वय ये सात तार जब तक ठीक रहेंगे, जीवन आनंदमय बन जाएगा। हम चाहते हैं हमारे श्रावक समाज में हर पल आनंद का वर्षण होता रहे। यह तब होगा जब व्यक्ति अध्यात्मोन्मुखी बनेगा।

साध्वीश्री ने कहा- मॉडल टाउन हरा-भरा क्षेत्र है। उर्वरक क्षेत्र है, उत्साही एवं संगठित क्षेत्र है। हमारे प्रवास का भरपूर लाभ लिया है। चातुर्मास में भी सवाया लाभ लेना है, ऐसी हमारी प्रेरणा है। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने विविध-विधाओं में प्रशिक्षण दिया।

सभाध्यक्ष प्रसन्नजी पुगलिया, महिला मंडल अध्यक्ष मधु जैन, सोनिया जैन, राजेश बैंगाणी, चाकल बांठिया, टीना एवं संगीता पुगलिया, हर्षिता पुगलिया, पुष्पा कुंडलिया, अजीत भादानी, सुनीता संचेती, राजेश संचेती, विजयराज चौपड़ा ने अपने भावों की प् रस्तुति देते हुए साध्वीवृंद के प्रति अहोभाव प्रकट किये।

भजन मंडली ने सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। किशोर मंडल एवं कन्या मंडल ने भी सामूहिक गान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन सभामंत्री प्रसन्न पुगलिया ने किया।

सहज, सरल, शांत, कांत स्फूर्तिमान थे मुनिश्री हर्षलालजी

● डॉ. साध्वी परमयशा आदि साध्वी वृंद ●

'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी के देवलोकगमन से जैन धर्म तेरापंथ शासन में एक लोकप्रिय, सहज, सरल, शांत, कांत स्फूर्तिमान मुनिश्री की कमी हो गयी।

प्रशंसनीय था आपका आत्मबल और मनोबल,
अनुकरणीय था आपका संकल्पबल और अध्यात्मबल,
आदरणीय थी आपकी संघनिष्ठा और गुरुनिष्ठा,
अनुमोदनीय थी आपकी संयमयात्रा और सत्यं शिवं यात्रा।।
भिक्षु शासन की ख्यात में आपका नाम विख्यात हो गया।
कमाल था आपका सेवाभाव और साधनाभाव,
बेमिसाल था आपका आत्मरमण और स्वाध्याय बल,
महनीय था आपका आगम बल और ध्यान योग,
कमनीय था आपका भक्ति योग और भाव योग।।

आदरास्पद मुनिप्रवर के जोश और जुनून की जितनी तारीफ करें उतनी ही कम है। आपने गुरुदृष्टि की सदैव आराधना की। गुरु-वचन और गुरु-चरण उनके लिए सर्वस्व थे। जहां-जहां गुरुदेव का आदेश होता, आपके चरण उधर ही गतिमान हो जाते। गुरुदृष्टि के लिए उनका तन-मन सर्वस्व समर्पित था।

वे एक निर्जराथीं संत प्रवर थे। अपना कार्य यथासंभव आप ही करवाते थे। कई बार गोचरी भी पधारते, सिलाई-रंगाई भी करवाते। श्रावक-श्राविकाओं को ध्यान, तप, त्याग की प्रेरणा दिराते। उनके लिए जितना लिखें, उतना कम है। भीलवाड़ा में अच्छा चौमासा हुआ, सिरियारी में आप गुरुदर्शन के लिए पधारे। वे लाछुड़ा के लाडले थे। शासन के वरिष्ठ कर्मठ, आत्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ संत थे। कुछ माह पूर्व आपका चिकित्सा लाभ के लिए अहमदाबाद पदार्पण हुआ। आपकी कृपादृष्टि हम सब पर बहुत थी। आप कई बार दर्शन देने के लिए पधार जाते। मुनिश्री का जीवन दर्शन अनेक विशेषताओं से भरा था। मुनिश्री लिपिकला में दक्ष थे। आपने सूक्ष्म अक्षरों में भगवत गीता का सरस, सुंदर, लेखन करके अद्भुत इतिहास बना दिया। मुनिश्री यशवंतकुमारजी जैसे प्रबुद्ध संत को आपकी सेवा का लम्बे समय तक सहयोग मिला। जो श्वास और चित्तसमाधि देने वाला था। मुनिश्री मोक्षकुमारजी को भी आपकी सेवा का अवसर मिला।

खुशजमालों की याद आती है, बेमिसालों की याद आती है।
जाने वाले नहीं आते पर, जाने वालों की याद आती है।।

शान्तिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 15वें पट्टोत्सव का आयोजन

हनुमंतनगर। शान्तिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 15वें पट्टोत्सव का आयोजन साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा भवन हनुमंतनगर में उल्लासपूर्वक मनाया गया। महिला मंडल की बहनों ने महाश्रमण अष्टकम् से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। साध्वी उदितयशाजी ने महाश्रमण के शिष्य स्वरुप को प्रकट करते हुए कहा कि पात्रता हो तो संपदाएं स्वयं आ जाती है।

आचार्य श्री महाश्रमण ने समर्पण और विनय के द्वारा अपनी पात्रता को उजागर किया। गुरु के वचन के प्रति उनका समर्पण अचम्भित करने वाला है। जो स्वयं समर्पित शिष्य होता है वही अनुशास्ता बन सकता है। साध्वी संगीतप्रभा जी ने आराधक से आराध्य बने आचार्यश्री के गुणों का विश्लेषण किया। साध्वी भव्ययशा जी ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन करते हुए आचार्यप्रवर के गुणों को आत्मसात करने के टिप्स दिए। सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी ने अपने विचार रखे। संगीता तातेड़ ने अपनी श्रद्धा अभिव्यक्ति दी। तेयुप द्वारा संचालित सुर संगम के सदस्यों व महिला मण्डल ने समवेत स्वरों में भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

मेक योर मार्क कार्यशाला से सीखे ब्रांड बनाने के गुर

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा मेक योर मार्क कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन गांधीनगर बेंगलुरु में किया गया। व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में हुआ।

तेयुप बेंगलुरु अध्यक्ष रजत बैद ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए परिषद द्वारा कृत कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी। उपाध्यक्ष मेहता ने समता, सम्मान एवं समानता के तीन गुण सदैव साथ में रखने की प्रेरणा दी।

इस कार्यशाला में प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने समय प्रबंधन, माइक्रो प्लानिंग एवं खुद का ब्रांड बनाने के गुर सिखाए। प्रशिक्षिका बबीता रायसोनी ने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यापारिक जीवन में संतुलन बनाने के तरीके समझाए। प्रशिक्षिकों ने वाणी संयम, मोबाइल संयम आदि के माध्यम से जीवन में परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी। प्रतिभागियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण के द्वारा भी जीवनोपयोगी बातें सिखाई गई। कार्यशाला में भाग लेने वाले 30 संभागियों ने कार्यशाला के अंतिम चरण में अपने आत्म विश्वास में निखार प्राप्त किया।

तेयुप बेंगलुरु के उपाध्यक्ष विवेक मरोठी एवं सह मंत्री संदीप चोपड़ा ने प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, बबीता रायसोनी एवं प्रायोजक रमेश, प्रकाश सालेचा का परिषद की ओर से सम्मान किया। संयोजक रमेश सालेचा, सह संयोजक प्रतीक जोगड़ एवं जय कोठारी का इस कार्यशाला में सराहनीय श्रम नियोजित हुआ।

संस्कारों से ही जीवन में पाई जा सकती है बड़ी सफलता

गंगाशहर में पंचदिवसीय आवासीय संस्कार निर्माण शिविर का हुआ आयोजन

गंगाशहर।

प्रथम दिवस -

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा पांच दिवसीय आवासीय संस्कार निर्माण शिविर का शुभारंभ आशीर्वाद भवन गंगाशहर में हुआ। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में अंचल के 11 क्षेत्रों से 104 शिविरार्थियों ने सहभागिता दर्ज करवाई। शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए साध्वी सहजप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के नौवें अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु ज्ञानशाला का अवदान दिया। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी भी संस्कारों के निर्माण व पल्लवन हेतु बहुधा अपने उपदेशों में समझाते हैं कि अच्छे संस्कारों से बालक अच्छे इंसान बन सकते हैं तथा अच्छे इंसान से भगवान भी बन सकते हैं।

डॉ. समणी मंजूप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी भावी पीढ़ी के संस्कारों के प्रति बहुत सजग थे। उन्होंने शिविर में जैन दर्शन, जैन परंपरा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के बारे में भी प्रशिक्षण होने की बात कही। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने कहा कि आपने सही समय में सही निर्णय लिया है। यह पांच दिन का समय आपका गोल्डन समय होगा। जिस प्रकार एक फल से अनेक फलों का उत्पादन हो सकता है उसी प्रकार एक बालक अनेक बालकों के जीवन में प्रकाश ला सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ।

तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, शिविर संयोजक राजेश बांठिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष जतन लाल छाजेड़ ने शुभकामनाएं देते हुए संबोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा के कोषाध्यक्ष रतन लाल छलाणी ने किया। डॉ. समणी मंजूप्रभा जी, समणी संकल्पप्रज्ञा जी, धीरेंद्र बोथरा, रेखा चौरड़िया, पीयूष नाहटा ने विभिन्न सत्रों में शिविरार्थियों को प्रशिक्षित किया।

द्वितीय दिवस -

संस्कार निर्माण शिविर के द्वितीय दिवस का प्रारंभ प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक धीरेंद्र बोथरा एवं प्रदीप ललवाणी द्वारा योगासन से हुआ। द्वितीय सत्र में समणी मंजुप्रज्ञाजी ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु के बारे में बताया। ममता रांका ने बच्चों को जैन लाइफस्टाइल के बारे में बताया। समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने बच्चों को मेमोरी पावर को बढ़ाने के टिप्स तथा चेतन एवं अचेतन मन के विषय में बताया। रेखा चौरडिया ने कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया।

तृतीय सत्र में बच्चों को लोगस्स के बारे में बताया एवं चतुर्थ सत्र में पीयूष नाहटा ने क्षमा की व्याख्या की। अंत में नमस्कार महामंत्र पर क्विज में बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

तृतीय दिवस -

शिविर के तीसरे दिन बच्चों ने तेरापंथ भवन और शान्ति निकेतन में विराजित साधु-साध्वियों के दर्शन कर मंगल पाथेय प्राप्त किया। समणी मंजुप्रज्ञा ने कायोत्सर्ग का अभ्यास करवाया। समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने 'अंक विज्ञान - जानो शत्रु-मित्र को,' विषय पर न्यूमरोलॉजी के आधार पर व्यक्तित्व को सफल बनाने की विधि बताई। मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली ने ऊर्जा, उत्सुकता और उल्लास से उत्कर्ष बनने की बात कही। कोमल पुगलिया एवं मनोज छाजेड़ की मधुर गीतिकाओं से आज के सत्रों का समापन हुआ।

चतुर्थ दिवस -

चतुर्थ दिवस ज्ञानवर्धक और विभिन्न आयामों से भरपूर रहा। बच्चों ने अनेक सत्रों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अहमदाबाद से समागत योग प्रशिक्षिका मिनल ने योग थेरेपी के माध्यम से स्वस्थ रहने के सूत्र प्रस्तुत किए। समणी डॉ. मंजुप्रज्ञा और स्वर्णप्रज्ञा जी ने 'दिशा बदलो-दशा बदलो' विषय पर बताया कि हमारे ऊपर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का प्रभाव पड़ता है। चारों दिशाओं से आने वाली किरणें हमारे व्यक्तित्व और विचारों पर प्रभाव डालती है, अतः सही व्यक्तित्व के निर्माण में इनका भरपूर योगदान रहता है। समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी ने 'हमारे सच्चे दोस्त कौन?'' विषय पर प्रस्तुति देते हुए कहा कि बाहर के दोस्तों की अपेक्षा हमारा व्यवहार, चिंतन और अच्छे संस्कार ही हमारे जीवन को उज्जवल बनाते हैं। पीयूष नाहटा ने मोटिवेशनल स्पीच से बच्चों से सीधा संवाद साधा।

पंचम दिवस -

पाँच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का भव्य समापन समारोह डॉ. समणी मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नोखा के शिविरार्थियों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। शिविर सह संयोजक प्रदीप लोढ़ा ने शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि शिविर में बच्चों ने योगासन, कायोत्सर्ग, प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान, जीवन जीने के तरीका का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समणी डॉ. मंजूप्रज्ञा जी ने जैन दर्शन, तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन, तेरापंथ की परम्पराओं और सिद्धान्तों की जानकारी साझा करते हुए संस्कार निर्माण शिविरों की उपयोगिता प्रतिपादित की। उन्होंने भगवान महावीर के समता दर्शन का अध्ययन करने के लिए कहा और प्रतिदिन सामायिक साधना करने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने बताया कि शिविरार्थी बच्चों ने प्रतिदिन 8 से अधिक सामयिक, मौन साधना का अभ्यास, आहार संयम का जीवन जीने का अभ्यास किया। उन्होंने बताया कि संस्कारों से ही बड़ी सफलता पाई जा सकती है। शिविरार्थी जयेश छाजेड़, पुनीत बोथरा, यश बांठिया, शुभम बोथरा, यश बुच्चा, हर्षित नौलखा, दिव्यम गुलगुलिया, मुदित गोलछा, ईशान रांका ने अपने अनुभव साझा किए। संस्कार निर्माण शिविर में कार्तिक नाहटा को श्रेष्ठ शिविरार्थी, यश बांठिया को अनुशासित शिविरार्थी, धरणेन्द्र चोरड़िया को संस्कारी शिविरार्थी, यश चोपड़ा को संयमी शिविरार्थी, करण गिडिया को समयबद्ध शिविरार्थी का सम्मान किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कुल 97 शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

शिविर में प्रशिक्षण देने आए अहमदाबाद से मिनल चौपड़ा, मोटीवेटर पीयूष नाहटा, योग प्रशिक्षक धीरेन्द्र बोथरा, प्रदीप कुमार ललवाणी, रेखा चौरडिया, चक्रवर्ती नारायण श्रीमाली, ममता रांका को सम्मानित किया गया।

महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़, महासभा के शिविर सह-संयोजक भेरूदान सेठिया, युवक परिषद अध्यक्ष महावीर फलोदिया, महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, शान्ति प्रतिष्ठान के मंत्री दीपक आंचलिया, अणुव्रत समिति के मंत्री मनीष बाफना, धर्मेंद्र डाकलिया, तेरापंथ प्रोफेशनल फॉरम के अध्यक्ष डॉ. संजय लोढ़ा ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री जतनलाल संचेती ने किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा के कोषाध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने किया। शिविर में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ किशोर मंडल, स्थानीय संयोजक रतनलाल छलाणी, सह संयोजक प्रदीप लोढ़ा, महासभा कार्यकरिणी सदस्य भेरूदान सेठिया एवं सभी कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हुआ।

जीने के ढंग से बना सकते हैं अपनी जिंदगी को शानदार एवं खुशहाल

हरिनगर, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्रीजी का दिल्ली के उपनगरों की यात्रा के क्रम में विजय जैन के भावपूर्ण अनुरोध पर हरिनगर पादार्पण हुआ। पहली बार हरिनगर में तेरापंथी साध्वियों के आगमन से सम्पूर्ण जैन समाज ने हर्षोल्लास के साथ साध्वीवृंद की अगवानी की। इस अवसर पर सनातन मंदिर के रमणीय परिसर में जीवन-विकास कार्यशाला का सुंदर आयोजन हुआ।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने 'हैप्पी लाइफ' के टिप्स देते हुए कहा- हमें कहां जन्म लेना है, यह हमारे हाथ में नहीं है। हमें रंग कैसा मिलेगा, यह भी हमारे हाथ में नहीं है, किंतु जीने का ढंग हमारे हाथ में है। हम अपने जीने के ढंग से अपनी जिंदगी को शानदार एवं खुशहाल बना सकते हैं।

साध्वीश्री ने कहा- जिस व्यक्ति के विचार समुन्नत होते हैं, स्वभाव शालीन एवं व्यवहार मधुर होता है, वह खुशहाल जिंदगी का मालिक बनता है। साध्वीश्री ने आगे कहा- आज हमारे हरिनगर पादार्पण पर विजय जैन का उत्साह आकाश को छू रहा है। परिवार की श्रद्धा, भक्ति ने हमारे दिल में स्थान बनाया है।

पूरे जैन समाज की भक्ति अभिभूत करने वाली है। साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी समत्वयशाजी ने गीत का संगान एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच का कुशल संचालन किया।

विजय जैन ने भावुक होकर कहा- मैं साध्वीश्री के उपकार को जिंदगीभर नहीं भूल पाऊंगा। दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, मानसरोवर गार्डन सभा अध्यक्ष नरेंद्र पारख, पालम सभाध्यक्ष ईश्वर जैन, उत्तरनगर स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष बंटी जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। पश्चिम दिल्ली महिला मंडल ने मंगल गीत का संगान किया। पालम ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाओं ने सुंदर प्रस्तुति दी।

पृष्ठ 7 का शेष

प्रज्ञा के अनुत्तर पुरुष...

मनुष्य के भाव ही व्यक्ति को सुखी और दुःखी बनाते हैं। सुख का संबंध चेतना के साथ है और सुविधा का संबंध पदार्थ के साथ है। सुविधा और सुखानुभूति में यह बड़ा अन्तर है। बुद्धि कामधेनु बन सकती है तो विषधेनु भी बन सकती है। बुद्धि के साथ भाव शुद्धि है तो वह कामधेनु बन सकती है। बुद्धि व शुद्धि के लिये जरूरी है मनुष्य की चेतना में अध्यात्म का विकास हो।

धर्म का घोष है 'मित्ती मे सव्वभूएसु' - सब जीवों से मैत्री मेरी। प्राणीमात्र के साथ मैत्री का विचार श्रेष्ठ है। 'मैत्री मे सहवर्तिषु'- सहजीवियों के साथ मेरी मैत्री हो। इस विचार को जीवन व्यवहार में प्रतिष्ठित कर दिया जाये तो भी जीवन काया कल्प हो सकता है। दुःख और समस्या को भिन्न-भिन्न मानना चाहिये। हर व्यक्ति समस्याग्रस्त हो सकता है पर समस्याग्नस्त व्यक्ति का दुःखी होना जरूरी नहीं है। महापुरुष के जीवन में समस्या और कठिनाई आ सकती है, पर वे कभी दुःखी नहीं होते हैं। अनैतिक साधनों से अर्थ का उपार्जन करना अर्थ नहीं, अर्थाभास है। अर्थ जब साध्य बन जाता है तब अर्थोपार्जन में विकृति का प्रवेश हो जाता है।

तेरापंथ निर्देशिका का हुआ लोकार्पण

शांति निकेतन, गंगाशहर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में गंगाशहर तेरापंथ निर्देशिका का लोकार्पण समारोह शांति निकेतन में आयोजित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि गंगाशहर धर्म संघ का विशिष्ट क्षेत्र है। तेरापंथी सभा के कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम है। जिस कार्य का चिंतन कर लेते हैं, वह पूर्ण होता है।

गुरुदेव के आशीर्वाद से निर्देशिका का यह महत्वपूर्ण कार्य आज पूर्ण हुआ है। निर्देशिका धार्मिक दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है। संकल्प शक्ति, गुरु भक्ति और टीम भावना की लगन के साथ इस कार्य को संपन्न किया है। यहां पर महाप्रज्ञ अलंकरण, साध्वीप्रमुखा चयन व युवाचार्य मनोनयन समारोह जैसे आयोजन हुए हैं तथा महाप्रतापी आचार्य तुलसी की पुण्य भूमि बनने का सौभाग्य गंगाशहर को मिला है। गंगाशहर क्षेत्र का इतिहास स्वर्णिम पृष्ठों से परिपूर्ण है तथा यह नए-नए पृष्ठ अंकित करें, ऐसी शुभकामना है।

निर्देशिका की प्रथम प्रति तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ व तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी को निवेदित की। संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने निर्देशिका प्रकाशन को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि गंगाशहर तेरापंथ समाज की चिर प्रतीक्षित इच्छा व आवश्यकता की पूर्ति हुई है। उन्होंने कहा तेरापंथ समाज गंगाशहर में यह प्रथम अवसर है कि समाज की डायरेक्टरी का प्रकाशन हुआ है इसलिए उन्होंने सभा के कार्यकर्ताओं की टीम भावना तथा निस्वार्थ कार्य शैली की सराहना की।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा प्राप्त सन्देश वाचन करके कहा कि आज यह जो क्षण आया है वह गुरुकृपा से तथा समय-समय पर यहाँ पधारे चारित्रात्माओं के आशीर्वाद से ही संभव हुआ है। सोनी ने निर्देशिका प्रकाशन में मिले सहयोग हेतु सभी कार्यकर्ताओं, संस्थाओं व आर्थिक सहयोग कर्ताओं को धन्यवाद दिया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अरुण नाहटा ने शुभकामनाएं व बधाई दी। तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छलाणी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया की निर्देशिका में समाज के 1628 परिवारों का सदस्यों के नाम, शिक्षा व व्यापार सहित सभी जानकारियां प्रकाशित किए गए है। लगभग 400 पेज की निर्देशिका में गंगाशहर का इतिहास, साधु-साध्वी चातुर्मास आदि से संबंधित तथ्य दिए गए हैं। डायरेक्टरी के डिजिटल संस्करण का लोकार्पण छापर चातुर्मास के समय आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में किया गया था। उन्होंने कहा कि अब भी कोई भी व्यक्ति अपने परिवार की जानकारी ऑनलाइन अपडेट कर सकता है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से हुई मधुर वार्ता

ठाणा।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी की महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से महत्वपूर्ण विषयों पर वार्ता हुई, जिसे मुख्यमंत्रीजी ने सकारात्मक रूप में लिया। मुनिश्री ने कहा कि सद्भावना, नशा मुक्ति और नैतिकता का भव्य प्रचार होना चाहिए, जिससे मानवीय गुणों का विकास हो और घर-घर में हर्षोल्लास हो। मुनिश्री ने आगे कहा कि मैंने कुछ दिन पूर्व न्यूज पेपर में पढ़ा कि स्कूलों में बच्चों को भोजन के साथ अंडे दिए जाएं। इस पर आपको चिंतन करना चाहिए। हमारा देश ऋषि प्रधान है। माननीय प्रधानमंत्री मोदीजी ने जी-20 कार्यक्रम में विदेश से आए विशिष्ट महानुभावों को शाकाहारी भोजन परोसा, इससे भारत देश की गरिमा बढ़ी। परंतु बच्चों को अगर प्रारंभ से ही अंडे खाना सीखा दिया जाएगा तो हमारी संस्कृति की सुरक्षा कैसे रह पाएगी? मुनिश्री की बात को सुनकर मुख्यमंत्री महोदय ने कहा- इस पर चिंतन करके अन्य पौष्टिक पदार्थ पर ध्यान दिया जा सकता है। मुनिश्री ने कहा- हम आचार्यश्री महाश्रमण जी के शिष्य हैं। उनका इस वर्ष का चातुर्मास सूरत महावीर यूनिवर्सिटी में है। अगर आप एक बार दर्शन प्रवचन का लाभ लें तो अति उत्तम होगा। इस अवसर पर महाराष्ट्र की गृहसचिव श्रीमती सुजाता सोनिक से भी वार्तालाप हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण अभिवंदना समारोह आयोजित

राजलदेसर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा के 50वर्षों की परिसंपन्नता पर तेरापंथ भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान करते हुए 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने कहा- तेरापंथ के यशस्वी आचार्य हैं आचार्य श्री महाश्रमण जी, जिनका संयम अनुत्तर है।

आचार्यश्री की ऋजुता, विनम्रता, निस्पृहता, करुणा अनूठी है। अनेक संप्रदाय के आचार्य भी आचार्यश्री महाश्रमण जी के संयमी जीवन को ऊंची निगाहों से देखते हैं। वे जन-जन के कल्याण के लिए अहिंसा यात्रा के द्वारा नैतिकता, सद्भावना व नशा मुक्ति का संदेश दे रहे हैं। तेरापंथ धर्म संघ में विकास के नए-नए आयाम उद्घाटित कर रहे हैं। गुरुदेव के प्रति मंगल कामना करते हैं कि युगों युगों तक गुरुदेव की अनुशासना हमें मिलती रहे। इस अवसर पर साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी कमलयशा जी व साध्वी स्नेहप्रभा जी ने 'कीर्तिधर के कीर्तिमान' कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति दी।

साध्वी कुशलप्रज्ञाजी, साध्वी चैत्यप्रभाजी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष राजकुमार विनायक, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, खेमचंद बरड़िया, रीना बैद, आरती बैद, मीनाक्षी जैन, लक्षिता जैन, महक जैन आदि ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। इस अवसर पर साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

ज्ञानशाला के बच्चों के लिए 'महाश्रमण क्विज प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दिव्या घोषल एवं जिया बैद के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इन्दुयशाजी ने किया।

अनुशास्ता अभिवंदना समारोह का आयोजन

उत्तर हावड़ा

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में 'अनुशास्ता अभिवंदना' समारोह का आयोजन मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में उत्तर हावड़ा तेरापंथ भवन में अणुव्रत समिति हावड़ा एवं कोलकाता द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है। गुरु मोक्ष का मार्ग दिखलाते हैं। गुरु की सन्निधि में आने वाला व्यक्ति आशुतोष बन जाता है।

आचार शब्द में चार आ शब्द है- आज्ञा, आगम, आस्था और आराधना। विचार शब्द में चार वि है- विनय, विरक्ति, विवेक, विधायक भाव। ये सारे शब्द आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन चरित्र में साकार हो रहे हैं।

आचार्यश्री आत्म आराधक व श्रुत आराधक हैं। उनके विचारों में उदारता व निर्मलता है। इस अवसर पर मुनि कुणालकुमार जी ने अभिवंदना गीत प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता रतनलाल दुगड़ ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमण वीतराग पथ के पथिक हैं वे पंचाचार की साधना, रत्नत्रयी की आराधना में सदैव सजग रहते हैं।

आचार्यप्रवर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के साकार रूप हैं। द्वितीय मुख्य वक्ता सुशील चोरड़िया ने कहा - आचार्यश्री महाश्रमणजी की विनयशीलता, श्रमशीलता, पापभीरूता, निस्पृहता विशिष्ट है। उन्हें महात्मा महाश्रमण करें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे स्पष्ट, दोष रहित भाषा के प्रति जागरूक रहते हैं। इस अवसर अणुविभा सदस्य पंकज दुधोड़िया, विकास दुगड़ की विशेष उपस्थिति रही।

मंगलाचरण अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से किया गया। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति हावड़ा के मंत्री वीरेन्द्र बोहरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

गाज़ियाबाद

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति ग़ाज़ियाबाद द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव को 'अनुशास्ता अभिवंदना समारोह' के रूप में स्थानकवासी संप्रदाय के मुनि रोहितकुमारजी आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में जैन स्थानक रामपुरी गाजियाबाद में आयोजित किया गया।

मुनि रोहितकुमारजी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी बहुत विद्वान हैं, उनकी अहिंसा यात्रा नैतिकता, सद्भावना, सौहार्द, शान्ति, समता का संदेश लेकर चल रही है। मुनि श्रेयांशजी ने वक्तव्य से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

कार्यक्रम की शुभ शुरुआत समिति की सदस्याओं द्वारा अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुई।

समिति की अध्यक्षा कुसुम सुराना ने अपने व्यक्तव्य में सभी का स्वागत किया। डॉ. कुसुम लूनिया द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उन्होंने 12 वर्ष की अल्पायु में ही दीक्षा ग्रहण की और समाज कल्याण को अपने जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य बना लिया था।

निगम पार्षद कृष्णशशि खेमका जी ने भी गुरुदेव की अभिवंदना में अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री श्री भीखम चंद सुराणा, अनुशास्ता बाबूलाल दूगड़, डॉ. धनपत लूनिया एवं विजयराज सुराना आदि गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शरद वार्ष्णेय ने किया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का शुभारम्भ

बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर बेंगलुरु द्वारा छठे आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का शुभारम्भ किया गया। जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश दुधेड़िया एवं विकास बांठिया ने नूतन एटीडीसी का उद्घाटन उद्घाटनकर्ता श्रीमती शायर हीरालाल मालू एवं मुख्य प्रायोजक रोशनलाल दिनेश राकेश पोखरणा परिवार द्वारा करवाया।

उद्घाटन से पूर्व साध्वी सिद्धप्रभाजी की सहवर्ती साध्वी आस्थाप्रभाजी आदि के मंगलपाठ से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के संयम पर्याय के 50 वर्षों की संपूर्णता पर तेयुप विजयनगर द्वारा नूतन आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर के दानदाताओं के सम्मान का कार्यक्रम एवं भव्य भक्ति संध्या आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र, कुम्बलगुड में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में सरगम विजेता लुधियाना से समागत किशोर दर्शन चोपड़ा और अहमदाबाद से समागत सुश्री जिज्ञासा पींचा ने भक्ति भाव से भजनों का मधुर संगान कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के सामूहिक मंत्रोच्चार से हुआ। विजय स्वर संगम द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेयुप अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी दानदाताओं का आभार व्यक्त किया। मेरे महाश्रमण भगवान, अनुदानदाताओं के सम्मान, दो दिवसीय अभातेयुप की द्वितीय कार्यसमिति बैठक, छठी एटीडीसी के शुभारंभ के आयोजन की स्वीकृति हेतु आभार व्यक्त किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने तेयुप विजयनगर को छठी एटीडीसी के शुभारम्भ पर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए दानदाताओं के समर्पण की सराहना की एवं तुलसी चेतना केंद्र के प्रांगण में अभातेयुप बैठक के व्यवस्थित आयोजन हेतु परिषद् को आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, अभातेयुप प्रबंध मंडल, अभातेयुप परिवार, विजयनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, तेयुप प्रबंध मंडल, पूर्व अध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य, प्रायोजक परिवार, विजयनगर बैंगलोर समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का हुआ शुभारंभ

बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा सेवा के नूतन उपक्रम आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का शुभारंभ राजाजीनगर क्षेत्र में जैन संस्कार विधि से किया गया। नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया एवं तेयुप बेंगलुरु अध्यक्ष रजत बैद ने आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का उद्घाटन किया।

संस्कारक जितेंद्र घोषल एवं विक्रम दुगड़ द्वारा पूर्ण विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा जैन संस्कार विधि का क्रम संपादित करवाया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में आयोजित उद्घाटन समारोह में तेयुप बेंगलुरु (गांधीनगर) अध्यक्ष रजत बैद ने उपस्थित राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रायोजक परिवार, मुख्य अतिथि एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए परिषद् द्वारा वर्ष भर में आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी सभी को प्रदान की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने परिषद को शुभकामना देते हुए कलेक्शन सेंटर शुरू करने, महामंत्री अमित नाहटा ने हॉस्टल की ओर कदम बढ़ाने, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया एवं उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने कीर्तिमानों की श्रृंखला को बनाए रखने की प्रेरणा देते हुए अपने-अपने शुभकामना स्वर प्रस्तुत किए। आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स के प्रायोजक नाहर परिवार की ओर से श्री मूलचंद नाहर, मुख्य अतिथि संजय बैद ने परिषद् के मानव सेवा के कार्यक्रमों की सराहना करते हुए आगे भी परिषद् के कार्यों में जुड़ने की भावना व्यक्त की। इससे पूर्व उपस्थित सभी ने परिषद् द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक का निरीक्षण कर सफल संचालन देखकर प्रसन्नता की अनुभूति की। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के राष्ट्रीय प्रभारी सौरभ मुनोत ने सुव्यवस्थित डायग्नोस्टिक सेंटर संचालन हेतु अपनी अनुमोदना व्यक्त की। कार्यक्रम में अभातेयुप से सहमंत्री लक्की कोठारी, कोषाध्यक्ष नरेशसोनी, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, संभाग प्रमुख अमित दक, गणमान्य व्यक्ति एवं तेयुप बेंगलुरु के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। दानदाताओं एवं अभातेयुप पदाधिकारियों का परिषद् परिवार द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में संयोजक तरुण पटावरी एवं प्रवीण नाहर का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। संचालन मंत्री रोहित कोठारी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

शाश्वत और पवित्र...

भीतर के जो हमारे सात्विक गुण क्षमा, उपशय, मार्दव, आर्जव, संतोष इनके द्वारा हम धर्म युद्ध में विजेता बन सकते हैं और आत्मरिपुओं को जीत भी सकते हैं।

हमारे भीतर सुख का बड़ा सागर लहरा रहा है। उसमें हम डुबकियां लगाने के लिए अध्यात्म की गहराई में जा सकें तो आत्मिक सुख के खजाने को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। भीतर के शत्रुओं पर अच्छी तरह चोट करें। चोट कहां करना यह ज्ञान होना भी अपने आपमें बड़ी महत्वपूर्ण बात है। चोट ज्यादा मोहनीय कर्म के परिवार के सदस्यों पर लगायें और अध्यात्म युद्ध में सफलता प्राप्त करने का प्रयास करें। जहां उचित हो वहां झुकें। हमारे आराध्य हैं, गुरु हैं, माता-पिता हैं, वहां झुकें पर हर जगह झुकना जरूरी नहीं। जहां हमारे पूजनीय है, वहां हम झुक सकते हैं।

'तुम आओ डग एक तो, हम आऐं डग अठ।
तुम हमसे करड़े रहो, तो हम हैं करड़े लठ।'

फालतू लड़ाई-झगड़ा किसी से न करें। खुद शान्ति से रहें और दूसरों को शांति से रहने दें। अध्यात्म की दृष्टि से खुद जागें और दूसरों को जगाएं। हमारे भीतर अहिंसा की भावना रहे। विरोध करने वाले के प्रति भी मंगल भावना रहे। शत्रु के प्रति भी मैत्री का भाव रहे। बीस वर्षों बाद अमलनेर आना हुआ है। मुनि भरतकुमारजी यहां के लोढ़ा परिवार से हैं।

साध्वी प्रबलयशाजी भी लाडनूं चाकरी करके आई हैं। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि हिन्दी शब्दकोष में दो शब्द विशेष है- गुरु और परमात्मा। दोनों में भी महत्वपूर्ण शब्द गुरु है। हमें परमात्मा तक पहुंचना है तो उसके पथदर्शक गुरु ही होते हैं। गुरु के द्वारा बताये उपायों द्वारा हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। जो हमारे मिथ्यात्व को नष्ट करता है और हमारे सम्यक् दर्शन का पथ प्रशस्त करता है, पुण्य-पाप को स्पष्ट करता है, वह गुरु होता है। गुरु संसार-सागर पार कराने वाले होते हैं। साध्वी प्रबलयशाजी ने श्रीचरणों अपनी भावना अभिव्यक्त कर सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यवर के स्वागत में सभाध्यक्ष राजेश वेदमुथा, प्रतीक लोढ़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल गीत एवं सकल जैन महिला मंडल ने गीत का संगान कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी में स्नान करने वाला पा सकता है मोक्ष : आचार्यश्री महाश्रमण

जलगांव।
17 जून, 2024

भैक्षव शासन के सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी खान्देश यात्रा के अंतर्गत द्विदिवसीय प्रवास हेतु अपनी धवल सेना के साथ जलगांव पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया- शास्त्र में कहा गया है कि देव भी उसको नमस्कार करते है जिसका मन सदा धर्म में रत रहता है। जिस आदमी के मन में धर्म है, उसे मनुष्य नमस्कार करे यह तो सामान्य बात है। उसे देव भी नमस्कार करते हैं यह गरिमापूर्ण बात हो सकती है। इससे भी बड़ी धर्म की गरिमा यह हो सकती है कि धर्म की साधना से भीतरी सुख-शान्ति और आनन्द मिलता है। परम धाम मोक्ष की प्राप्ति, सर्व दुःख मुक्ति, शाश्वत सुखों की प्राप्ति धर्म के द्वारा होती है। वह धर्म है- अहिंसा, संयम और तप। यह त्रिवेणी है, इसमें जो स्नान कर लेगा, डुबकी लगा लेगा वह आदमी मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

कोई भी व्यक्ति अहिंसा का पालन अपने जीवन में करेगा, उसका कल्याण होगा। संयम को कोई भी आत्मसात करेगा, उसका भला होगा और तप की आराधना जो भी करेगा उसकी शुद्धि हो सकेगी। जीवन में अहिंसा होनी चाहिए। अहिंसा महाव्रत साधुओं के द्वारा ग्रहण किया जाता है। साधु के लिए तो अहिंसा की साधना बहुत बड़ी है। रात्रि भोजन न करना, रात में पानी भी नहीं पीना कितनी बड़ी संयम की साधना है। तन से, मन से, वचन से किसी को दुःख देने का प्रयास नहीं करना, ऐसे दयामूर्ति, क्षमामूर्ति, समतामूर्ति साधु होते हैं।

दुनिया का सौभाग्य है कि हमेशा कहीं न कहीं तीर्थंकर विद्यमान होते हैं, संत रहते हैं। साधु अहिंसा के पुजारी, संयम और तप का जीवन जीने वाले होते हैं। गृहस्थों के जीवन में भी एक सीमा में अहिंसा, संयम और तप की साधना देखी जा सकती है। श्रावक-श्राविका भी तीर्थ हैं, अनेक प्रकार की साधना उनके जीवन में चलती है। साधु रत्नों की बड़ी माला है, तो श्रावक छोटी माला है। बहुत बड़ी बात है कि हमें मानव जीवन प्राप्त है, इसे धर्म की साधना में उपयोग करने का प्रयास करें।

साधु के पास संयम रूपी अमूल्य रत्न है। साधु का संन्यास रुपी हीरा इस जीवन में न छूटे, गृहस्थ का भी धर्म का जो हीरा है वह नहीं छूटे। विपत्ति आने पर भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए, धर्म को पकड़कर रखें। पूज्यप्रवर ने एक कथानक के माध्यम से समझाया कि जहाँ सत्य है, ईमानदारी है, वहाँ लक्ष्मी निवास करती है। शुद्धता की आभा रहती है, गृहस्थों के जीवन में ईमानदारी रहे। जैन हो, अजैन हो, आस्तिक हो या नास्तिक, ईमानदारी तो सबके लिए कल्याणकारी होती है। जीवन में उतार-चढ़ाव तो आ सकते हैं, सच्चाई के सामने परेशानियां भी आ सकती है, पर अंतिम सफलता सच्चाई की ही होती है। मानव जीवन में सच्चाई और ईमानदारी के प्रति सुझान रहे। करोड़ जाए तो जाए पर सच्चाई जीवन में रहे।

जलगांव के सन्दर्भ में पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ के साथ जलगांव आना हुआ था, करीब 20 वर्षों के बाद आज पुनः आना हुआ है। मानो हमारी हाजरी हो गयी कि जलगांव में आ गए हैं। यहां की जनता में धार्मिकता का भाव बना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि विहार चर्या को ऋषियों के लिए प्रशस्त माना गया है। परमपूज्य आचार्यवर इसी सूत्र का अनुसरण कर रहे हैं। आचार्यवर जनोद्धारक आचार्य हैं, जनोद्धारक आचार्य श्रम भी करते हैं और श्रम का प्रतिफल भी मिलता है। आचार्यवर का आभामंडल पवित्र परमाणुओं से भरा हुआ है, आचार्यप्रवर का जीवन पवित्रता का पुंज है। पूज्यवर के स्वागत में सभाध्यक्ष जितेंद्र चौरड़िया, सकल जैन संघ के अध्यक्ष दलीचंद जैन, स्वागताध्यक्ष सुरेश दादा जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। महाराष्ट्र सरकार के पालक मंत्री गुलाबराव पाटिल, ग्रामीण विकास एवं पर्यटक मंत्री गिरीश महाजन, जलगांव सांसद स्मिता वाघ, पूर्व सांसद ईश्वर जैन, विधायक सुरेश भोले ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई एवं महिला मंडल ने स्वागत गीत को स्वर दिए।

पूज्य गुरुदेव के पदार्पण के उपलक्ष में कंचन देवी छाजेड़ ने 51 एवं शारदा देवी पुगलिया ने 31 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मीनाक्षी देवी बैद ने धर्मचक्र की पूर्णाहुति के प्रत्याख्यान किये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चित्त समाधि के लिए दूसरों पर अवलम्बित न रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

पालधी।
19 जून, 2024

धर्मचक्रवर्ती आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाते हुए फरमाया कि वर्तमान अवसर्पिणी में जम्बूद्वीप के इस भरत क्षेत्र में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ और चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर हुए हैं। तीर्थंकर अपने आप में आदिकर्ता होते हैं, कोई किसी के उत्तराधिकारी नहीं होते हैं। आचार्यों में तो उत्तराधिकार की परंपरा हो सकती है। सब तीर्थंकर अपने आप में आदिकर होते हैं, स्वतंत्र होते हैं।

चौबीस तीर्थंकरों में सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ हुए हैं। वे चक्रवर्ती और महर्द्धिक थे, लोक में शांति करने वाले थे। अंत में भारत वर्ष को छोड़कर अनुत्तर गति मोक्ष को प्राप्त हो गये थे।

भौतिक दृष्टि में चक्रवर्ती बनना बहुत बड़ी बात है। चक्रवर्ती से बड़ा सत्ताधीश भौतिक जगत में मिलना मुश्किल है और आध्यात्मिक जगत में तीर्थंकर से बड़ा आदमी मिलना मुश्किल है। भगवान शांतिनाथ ऐसे व्यक्तित्व थे जो एक ही जीवनकाल में चक्रवर्ती और तीर्थंकर दोनों बन गए थे। भगवान शांतिनाथ शांति करने वाले हैं। दूसरों के निमित्त से शांति मिल सकती है। लक्ष्य यह रहे कि खुद भी शांति में रहो और दूसरों को भी शांति में रहने दो। शांति जो भीतर में होती है, वह स्व अनुभव गम्य होती है। आदमी अच्छी साधना करे, स्वयं पर अनुशासन रखे तो वह शांति में रह सकता है। चित्त समाधि तो स्वयं के हाथ में ही है, चित्त समाधि के लिए दूसरों पर अवलम्बित न रहें। फालतू बातों को दिमाग में स्थान न दें। हमारी शांति हमारे हाथ में रहे, अपने कषायों पर नियंत्रण रखें, ज्यादा

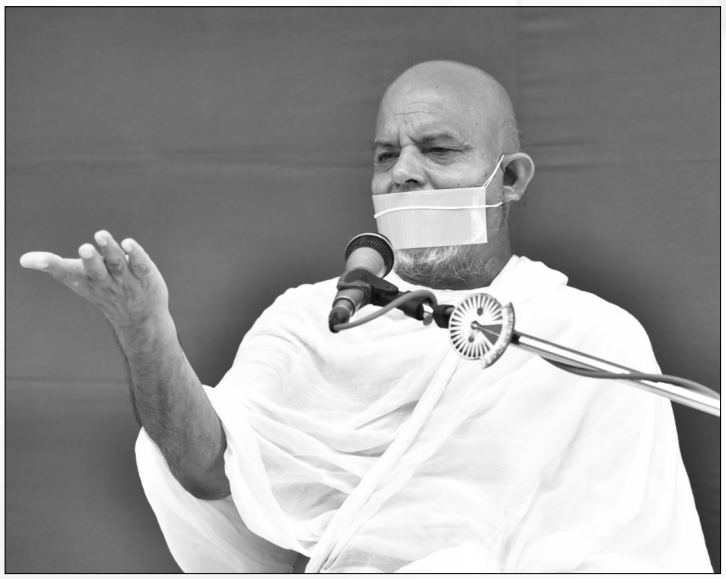

तनाव न रखे। जानना अलग बात है, संवेदना करना अलग बात है। ज्ञान के बाद संवेदना होना अच्छा नहीं है। किसी के कहने से हम छोटे या बड़े नहीं हो जाते हैं। हम अपनी ओर से किसी की शांति में बाधा न पहुंचाएं।

हमें ज्यादा गुस्सा आयेगा या ज्यादा चिन्ता होगी तो अशांति हो सकती है। चिन्ता और चिता में थोड़ा सा अन्तर है। चिता तो निर्जीव को जलाती है, चिन्ता सजीव को जला देती है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो, समस्या का उसका समाधान खोजने का प्रयास करो। भय, लोभ, लालसा से भी आदमी चिन्ता करने लग जाता है। मन की सारी इच्छाएं पूरी हो जाए यह तो कठिन है, मन में शांति रखें, तनाव मुक्त रहें। उचित पुरूषार्थ करें, प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तो तनाव न करें, उसमें हमारा कोई दोष नहीं। पुरुषार्थ में कमी रही हो तो उसे दूर करने का प्रयास जरूर हो।

संसाधनों से सुविधा मिल सकती है, पर शांति तो साधना से मिलेगी। प्रभु शांतिनाथ के नाम में ही शांति है। उनसे हम स्वयं शांति में रहने की व दूसरों को शांति में रहने देने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्य प्रवर के स्वागत में भाऊसाहब गुलाबराव पाटिल विद्यालय के प्रतापराव पाटिल ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

त्यागी-साधनाशील साधु की वाणी सुनने से मिल सकता है पथ दर्शन : आचार्यश्री महाश्रमण

जलगांव।
18 जून, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जलगांव प्रवास के द्वितीय दिन पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि हम पंचेन्द्रिय प्राणी हैं और उसमें भी मनुष्य हैं। पंचेन्द्रिय प्राणी वह होता है जिसके पास कान होता है, सुनने का साधन होता है। आंख होने मात्र से जीव पंचेन्द्रिय प्राणी नहीं हो जाता है, श्रवणेन्द्रिय होने से ही जीव पंचेन्द्रिय कहला सकता है।

कान हमारे पास हैं, हम सुनते भी हैं। सुनने से लाभ भी हो सकता है। सुनकर आदमी कल्याण को जान लेता है तो पाप को भी जान लेता है। जानने के बाद जो हेय-त्याज्य है, उसको छोड़ने का और जो श्रेय-कल्याणकारी है उसे स्वीकार करने का प्रयास होना चाहिए। श्रेय पथ, सन्मार्ग पर चलने से कल्याण हो सकता है। सुनने से ज्ञान मिलता है। वर्तमान में सोशियल मीडिया के इतने साधन हो गये हैं, जिनसे दूर बैठे-बैठे प्रवचन सुना जा सकता है। इन यंत्रों की उपयोगिता भी है पर इनका दुरूपयोग न हो। इनके प्रति एडिक्शन नहीं हो, इनका उपयोग करना विवेक का विषय है। साधु जो त्यागी-साधनाशील और संयमी हैं, उनकी वाणी सुनने से पर्युपासना भी हो जाती है और अनेकों जानकारियां भी मिल जाती हैं।

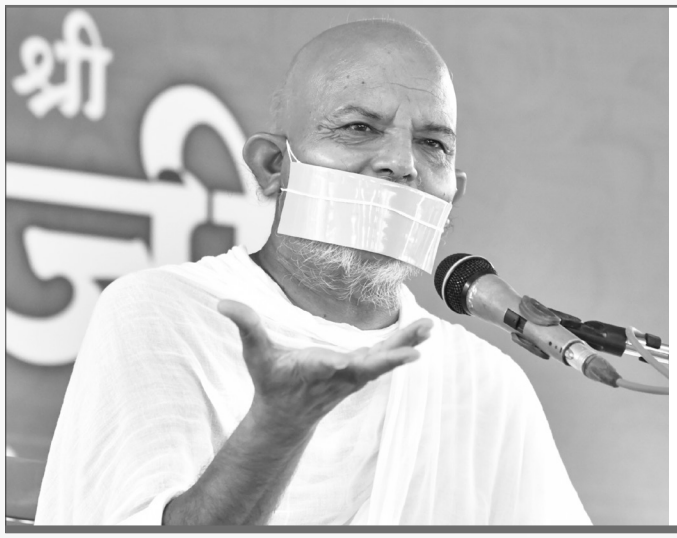

कई बार सुनते-सुनते पथ दर्शन मिल जाता है। त्याग और ज्ञान दोनों जिनके जीवन में हो ऐसी चारित्रात्माओं की वाणी सुनना अच्छा ही है, इससे अनेक लाभ मिल सकते हैं। वाणी जीवन में उतरे तो बहुत अच्छी बात है न उतरे तो भी जब तक सुन रहे हैं तब व्यक्ति अनेकों सांसारिक कार्यों से वंचित रह जाते हैं और पापों के बंधन से बचाव हो सकता है। ध्यान से सुनने से कई नई जानकारियां मिल सकती है और कई पूर्व जानकारियां पुष्ट हो सकती हैं। प्रवचन सुनते-सुनते मन की जिज्ञासा का समाधान और अपने जीवन की समस्या का समाधान भी मिल सकता है। सुनते-सुनते श्रोता अच्छा वक्ता भी बन सकता है। प्रवचन सुनने के समय सामायिक लेने से सामायिक का लाभ भी मिल सकता है।

कई बार सुनते-सुनते पथ दर्शन मिल जाता है। त्याग और ज्ञान दोनों जिनके जीवन में हो ऐसी चारित्रात्माओं की वाणी सुनना अच्छा ही है, इससे अनेक लाभ मिल सकते हैं। वाणी जीवन में उतरे तो बहुत अच्छी बात है न उतरे तो भी जब तक सुन रहे हैं तब व्यक्ति अनेकों सांसारिक कार्यों से वंचित रह जाते हैं और पापों के बंधन से बचाव हो सकता है। ध्यान से सुनने से कई नई जानकारियां मिल सकती है और कई पूर्व जानकारियां पुष्ट हो सकती हैं। प्रवचन सुनते-सुनते मन की जिज्ञासा का समाधान और अपने जीवन की समस्या का समाधान भी मिल सकता है। सुनते-सुनते श्रोता अच्छा वक्ता भी बन सकता है। प्रवचन सुनने के समय सामायिक लेने से सामायिक का लाभ भी मिल सकता है।

जीवन में कठिनाइयां आ सकती हैं, सामान्य व्यक्ति तो क्या, साधुओं के जीवन में भी कठिनाइयां आ सकती हैं। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में, संपत्ति और विपत्ति की स्थिति में भी मानसिक संतुलन बनाये रखना धर्म की साधना है। कठिनाई का हल निकाला जा सकता है। समस्या और दुःख एक चीज नहीं है। समस्या में भी दुःखी न हो, तनाव में न जाएं, मन में शांति बनी रहे। शांति में रहना जीने की बड़ी कला है, न ज्यादा गुस्सा करना, न ज्यादा लोभ करना, दूसरों के धार्मिक आध्यात्मिक उत्थान में सहयोग करना।

कान से अच्छी बातें सुनी जा सकती है, दुःखी आदमी का दुखड़ा भी शांति से सुन लें। सहानुभूति से किसी का दुःख सुनने से उस व्यक्ति को राहत मिल सकती है, फिर जितना हो सके उतना सहयोग करें। फालतू बातों में कानों का उपयोग न करें। श्रोतेन्द्रिय का अच्छा उपयोग करें, जीवन में धार्मिकता, आध्यात्मिकता की साधना के प्रति जागरूक रहें।

व्यक्ति यह सोचे कि पूर्व संचित पुण्य के योग से इस जीवन में अच्छा स्थान मिला है पर आगे के लिये भी कुछ सोचें। पुण्य से भी आगे मोक्ष प्राप्ति के लिए हम धर्म की साधना करें।

साध्वीवर्याजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपने जीवन का मूल्यांकन करना है कि क्या हम वास्तव में श्रावकोचित धर्म का पालन कर रहे हैं ? संघ रूपी प्रासाद के चार स्तम्भ हैं- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। आचार्य श्री तुलसी ने 'श्रावक संबोध' में लिखा है कि श्रावक-श्राविकाएं जिन शासन के अभिन्न अंग होते हैं और वे जिन शासन की प्रभावना में लगे रहते हैं। पूज्यवर भी जिनशासन की प्रभावना के लिए, श्रावक-श्राविकाओं की सार संभाल के लिए, पर कल्याण के लिए प्रलम्ब यात्रा करवा रहे हैं। श्रावक अपने आचरण को ऐसा बनाए जिससे वह शासन की प्रभावना बढ़ा सके। सामायिक, बारह व्रत, सुमंगल साधना भी श्रावक के आत्मिक जीवन का उत्थान करने वाले हैं।

संसार पक्ष में जलगांव से सम्बद्ध मुनि जितेंद्र कुमार जी एवं मुनि नय कुमार जी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने मुनिद्वय को सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। पुलिस अधीक्षक डॉ. महेश्वर रेड्डी, पूर्व महापौर जयश्री महाजन ने आचार्य प्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। तेरापंथ युवक परिषद्, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों, भिक्षु भजन मंडली, गौरा देवी छाजेड़ एवं कंचन देवी छाजेड़ ने पृथक-पृथक गीतों से अपने आराध्य का स्वागत किया। टीपीएफ अध्यक्ष संजय चोरड़िया, पवन सामसुखा, मोक्ष बरड़िया ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

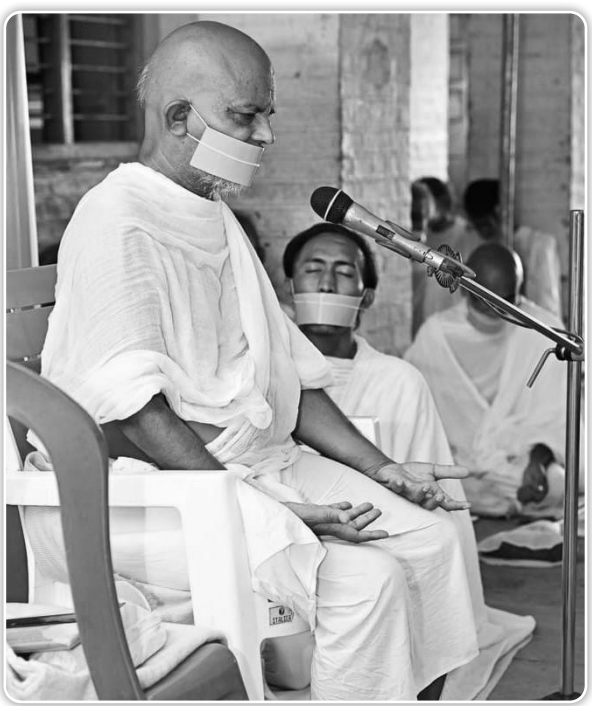

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**